शुभ दिपावली
दीपावली के पावन पर्व की आप सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं व शुभचिन्तकों को शुभकामनाएं।

सूचना –दीपावली व भाईदूज के पावन पर्व पर दैनिक 'धनुषधारी' कार्यालय का अवकाश रहेगा। अत: पाठकों से हमारी अगली मुलाकात 25 अक्टूबर, 2025 के अंक के रूप में होगी।
– व्यवस्थापक

ठाणे जिले का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

दीपावली विशेषांक

दैनिक धनुषधारी

सिर्फ 2 रू.

संस्थापक प्रधान संपादक स्व. श्री दिलीप जे. लालवानी

वर्ष-32, अंक 273, उल्हासनगर, मंगलवार 21 अक्टूबर 2025 (पृष्ठ 16)

Mob. No. 9325937797

E-mail Add.:- newsddd@gmail.com dailydhanushdhari@yahoo.com

Post Regd No.THC/111/2024-2026
RNI No. 68359/93,

dhanushdharinews | Dhanushdhari | DhanushdhariN | Website - www.dailydhanushdhari.com

चार मंजिला खतरनाक इमारत बनी सात मंजिला शानदार सेवन हिल्स

राजू इदनानी ने दिवाली से पहले 28 परिवारों को दिए उनके सपनों के घर

उल्हासनगर (नि.स.) । उल्हासनगर कैंप 1, बेवस चौक में चार मंजिला खतरनाक इमारत लाहोरी पैलेस का रीडेवेलपमेंट कर इसे अब सात मंजिला भव्य इमारत सेवन हिल्स में बदल दिया गया है। दिवाली की पूर्व संध्या, रविवार 19 अक्टूबर को डेवलपर राजेश इदनानी (शेरा) ने 28 परिवारों को उनके नए फ्लैट्स की चाबियां सौंपी। जिससे फ्लैटधारकों के चेहरे खुशी से चमक उठे। एस.एम इंफ्रास्ट्रक्चर द्वारा बनाया गया यह प्रोजेक्ट, शहर में लंबे समय से लंबित पड़े रीडेवेलपमेंट कार्यों के बीच एक बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है।

इस अवसर पर लैंड ओनर प्रदीप लाहोरी ने कहा कि हमारी लाहोरी फैमिली पार्टीशन के समय से यहां रहती है। 1994 में लाहोरी पैलेस का निर्माण हुआ था, लेकिन क्वालिटी सही नहीं थी। करीब 25 साल बाद हमने इसे रीडेवेलपमेंट के लिए राजू इदनानी को सौंपा। आज सभी फ्लैट ओनर्स गर्व महसूस कर रहे हैं कि उन्हें उनका नया घर मिल गया है। इस प्रोजेक्ट में कुल 32 फ्लैट्स तैयार किए गए हैं। इस सफलता के लिए हम राजू शेरा को धन्यवाद देते हैं। बिल्डिंग के एक फ्लैटधारक ने कहा कि शहर में कई इमारतें हैं जिनका काम लंबे समय से ठप पड़ा है। हमें उम्मीद नहीं थी कि हमें इतनी शानदार बिल्डिंग मिलेगी, लेकिन राजू इदनानी ने दिखा दिया कि उल्हासनगर में भी इस प्रकार का शानदार रीडेवलपमेंट संभव है। दिवाली से पहले ही हमारी खुशी का त्यौहार शुरू हो गया।

वहीं, डेवलपर राजू इदनानी (शेरा) ने कहा कि तीन साल पहले हमें लाहोरी पैलेस का रीडेवेलपमेंट करने की जिम्मेदारी मिली। बिल्डिंग मालिकों ने मुझ पर जो भरोसा किया, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। हमने पूरे तीन साल में इस प्रोजेक्ट को पूरा किया और अब यह भवन सेवन हिल्स के नाम से जाना जाएगा। पहले यह चार मंजिला थी, अब सात मंजिला बन चुकी है, जो कि उल्हासनगर कैंप 1, बेवस चौक, टेकड़ी पर स्थित है।

उल्हासनगर के बाजारों में दिवाली खरीदारी के बीच जेबकतरें हुए सक्रिय

पुलिस ने नागरिकों से की सतर्क रहने की अपील

उल्हासनगर(नि.स.) । दिवाली का जश्न, जगमगाते बाज़ार और खरीदारी के लिए उल्हासनगरवासियों की भीड़.. लेकिन इस उत्साह में सावधानी बरतने की सख़्त ज़रूरत है। नेहरू चौक और आसपास के बाज़ारों में ख़रीदारों की भारी भीड़ को देखते हुए पुलिस ने त्योहारी सुरक्षा अभियान शुरू कर दिया है। वर्दीधारी और सादे कपड़ों में पुलिस की तैनाती के बावजूद, पॉकेटमारी और बच्चों के लापता होने की शिकायतों का तांता लगा हुआ है, जिससे नागरिकों में चिंता बढ़ गई है। दिवाली के मद्देनजर शहर के बाज़ार रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगा उठे हैं। नेहरू चौक, जापानी बाज़ार, गजानन मार्केट और अमन रोड इलाकों में सुबह से ही ख़रीदारों की भारी भीड़ देखी गई। नागरिक कपड़े, मिठाइयाँ, दीये, पटाखे, सजावटी सामान, उपहार और नमकीन ख़रीदने के लिए बाज़ारों में पहुंचे। बढ़ती भीड़ के कारण पुलिस ने सुरक्षा के विशेष उपाय किए हैं। उल्हासनगर पुलिस ने भीड़-भाड़ वाली जगहों पर अनुशासन और सुरक्षा बनाए रखने के लिए भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया है। वर्दीधारी पुलिस के साथ-साथ सादे कपड़ों में तैनात पुलिस अधिकारी भी बाज़ार पर कड़ी नज़र रख रहे हैं। नागरिकों से किसी भी प्रकार की चोरी, पॉकेटमारी या बच्चों के लापता होने की घटनाओं को रोकने के लिए विशेष टीमें नियुक्त की गई हैं। हालाँकि, पुलिस की सतर्कता के बावजूद, पिछले कुछ दिनों में पॉकेटमारी और बच्चों के लापता होने की कुछ शिकायतें दर्ज की गई हैं। कुछ जगहों पर महिलाओं के पर्स खोलने की कोशिश और मोबाइल फ़ोन चोरी की घटनाएँ भी सामने आई हैं। पुलिस ने इन शिकायतों पर ध्यान दिया है और अपराधियों को पकड़ने के लिए जाँच और तलाशी शुरू कर दी है। साथ ही, पुलिस ने अनाउंसमेंट के माध्यम से नागरिकों को जागरूक करने की सार्वजनिक अपील करते हुए कह रही है कि वे अपना कीमती सामान सुरक्षित रखें, बच्चों को भीड़ में अकेला न छोड़ें, और अगर आपको कोई संदिग्ध गतिविधि दिखाई दे, तो तुरंत नज़दीकी पुलिस या 112 पर संपर्क करें।

वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक संतोष आव्हाड ने कहा कि हमने दिवाली का त्यौहार शांतिपूर्ण और सुरक्षित रूप से मनाने के लिए पूरी तैयारी कर ली है। भीड़-भाड़ वाली जगहों पर सीसीटीवी निगरानी, गश्ती दल और त्वरित प्रतिक्रिया दल 24 घंटे काम कर रहे हैं। पुलिस ने नागरिकों से भी पुलिस को सहयोग करने और जागरूकता के साथ त्यौहार मनाने का अनुरोध किया है। इस बीच, पुलिस की मौजूदगी से बाज़ार में कुछ हद तक विश्वास पैदा हुआ है, लेकिन जेबकतरों की गतिविधियों के कारण अलर्ट अभी भी जारी है।

दैनिक धनुषधारी
शुभ दीवाली

सम्पादकीय...

दिवाली खुशियों वाली

हिन्दूओं के सबसे बड़े महापर्व दीपावली को बुराई पर अच्छाई और असत्य पर सत्य की जीत का प्रतिक माना जाता है और इसी आधार पर यह महापर्व हिन्दुस्तान ही नहीं, वरन विदेशों में बसे भारतीय और अन्य धर्म, देश के लोगों द्वारा उत्साह पूर्वक मनाया जाता है, परन्तु अब समय है कि दीपावली के महापर्व के संदेश को वृहद रूप दिया जाये. इस त्यौहार को अब मानवता और समानता का प्रतिक भी माना जाये, ताकि हमारे देश ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में आज जहां हिंसा और असमानता का रावण राज कर रहा है. हिंसा और असमानता ने लोगों का जीना दुश्वार किया हुआ है. ऐसे अशांत और असमान माहौल में दीपावली का महापर्व प्रासंगिक है और इस त्यौहार को अब राम राज्य का संदेश देने वाले महापर्व के रूप में मनाया जाना चाहिए, जिस राम राज्य में हिंसा की कोई जगह नहीं होती, जिस राम राज में राजा और रंक दोनों ही समान रूप से जीवन यापन करते हैं. खुशियों का माहौल चहुओर रहता है. कोई किसी से भेदभाव, ईर्ष्या व वैमन्य नहीं रखता, सभी एक राजा के राज में खुशी-खुशी रहते हैं. आज के अशांत और हिंसक परिपेक्ष में राज राज की नितांत आवश्यकता है. हिन्दू हो या मुस्लिम, सिख हो या ईसाई सभी लोग शांति के साथ खुशी-खुशी अपने परिजनों के साथ जीवन जीने की ख्वाहिश रखते हैं और यह ख्वाहिश राम राज में ही निहित है। इसलिए राम राज की परिकल्पना के साथ हमें दीपावली का त्यौहार मनाना चाहिए और अन्यों को भी हमारी इस खुशी में शामिल करना चाहिए।

अब इस पर्व को स्वास्थ्य से जोड़ते हैं। घर, दुकान और दफ्तर की सफाई करने के बाद लोग पुरानी चीजों या सामान को नदी-नाले में 'परवान' करते हैं जिसमें बड़ी मात्रा में प्लास्टिक की थैलियां भी होती हैं और ऐसा सामान भी जो नदी नाले को 'जाम' कर देता हैं। बात तो यह भी होती है कि लोग रद्दी व गैर जरूरी सामान कचरे के डिब्बों में डाल देते हैं जो दो तीन दिन तक भरा रहता है क्योंकि छुट्टी के कारण मनपा के सफाई कामगार अथवा ठेकेदार नहीं उठाते। इस कारण बहुत ज्यादा कचरा हाने से बदबू फैलती है। जरा सोचिये कि आप नये कपड़े पहनकर, इन कचरों के डिब्बे के पास से गुतरते हैं तो दिवाली पर आपको कैसा महसूस होगा! दूसरी बात, लोग जमकर पटाखे फोड़ते हैं। आजकल तो लंबी पटाखों की लड़ें फोड़ने का चलन है, जिससे बड़ी मात्रा में कसैला धुंआ फैलता है, और हजारों रूपए के पटाखे 'स्वाहा' हो जाते हैं। इसमें जिन लोगों को खुशी मिलती है वह क्षणिक होती है। परंतु धुंए से जो बीमारियां पनपती हैं, उसका क्या? इसके अलावा दिवाली पर जो मिठाई बनती है। वह होती तो खुशी का प्रतीक है परंतु अगर वह मिठाई कई दिन पहले बनाई गई हो, बासी हो तो लोग बीमार पड़ जाते हैं। विष बाधा के सबसे ज्यादा मामले इस पर्व के आस पास देखे गए हैं। खुशी-खुशी में लोग मिठाई खा लेते है बाद में उनको याद आता हैं कि कुछ ज्यादा ही 'मीठा' हो गया। मधुमेह का रोग भी इतना ज्यादा फैला हुआ है कि लोगों को चाय के बारे में भी पूछना पड़ता है कि फीकी पीएंगे या शक्कर वाली चाय। सो दिवाली में ज्यादा मीठा खान पान भी सेहत के लिए हानिकारक है। इसलिए 'धनुषधारी' परिवार आप सबको विनंती कर रहा है कि अगर स्वस्थ दिवाली मनानी है तो साफ सफाई में निकले कचरे को व्यवस्थित ढंग से 'डंप' करें। पटाखे जरूर फोड़े पर वही पटाखे जलाएं जिससे ध्वनि प्रदूषण और वायू प्रदूषण न हो। साथ ही ज्यादा मीठे चॉकलेट व मिठाई से परहेज रखें। तभी आप स्वस्थ दीपावली मना सकते हैं। 'धनुषधारी' परिवार की तरफसे आप सभी को दीपावली की ढेर सारी शुभकामनाएं।

संपादक, टीकम लालवानी

महालक्ष्मी को प्रसन्न करने का पर्व है दीपावली

दीपावली के दिन भारत में विभिन्न स्थानों पर मेले लगते हैं। दीपावली एक दिन का पर्व नहीं अपितु पर्वों का समूह है। दशहरे के पश्चात ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती है। लोग नए-नए वस्त्र सिलवाते हैं। दीपावली से दो दिन पूर्व धनतेरस का त्योहार आता है। इस दिन बाज़ारों में चारों तरफ़ जनसमूह उमड़ पड़ता है।

दीपावली अथवा दिवाली भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। त्योहारों का जो वातावरण धनतेरस से प्रारम्भ होता है, वह आज के दिन पूरे चरम पर आता है। दीपावली की रात्रि को घरों तथा दुकानों पर भारी संख्या में दीपक, मोमबत्तियां और बल्ब जलाए जाते हैं। दीपावली भारत के त्योहारों में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इस दिन लक्ष्मी के पूजन का विशेष विधान है। रात्रि के समय प्रत्येक घर में धनधान्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मीजी, विघ्न-विनाशक गणेश जी और विद्या एवं कला की देवी मातेश्वरी सरस्वती देवी की पूजा-आराधना की जाती है। ब्रह्मपुराण के अनुसार कार्तिक अमावस्या की इस अंधेरी रात्रि अर्थात अर्धरात्रि में महालक्ष्मी स्वयं भूलोक में आती हैं और प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में विचरण करती हैं। जो घर हर प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुंदर तरीक़े से सुसज्जित और प्रकाशयुक्त होता है वहां अंश रूप में ठहर जाती हैं। इसलिए इस दिन घर-बाहर को खूब साफ-सुथरा करके सजाया-संवारा जाता है। दीपावली मनाने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर स्थायी रूप से सद्गृहस्थों के घर निवास करती हैं।

धार्मिक मान्यता

दीपावली के दिन आतिशबाजी की प्रथा के पीछे सम्भवत- यह धारण है कि दीपावली-अमावस्या से पितरों की रात आरम्भ होती है। कहीं वे मार्ग भटक न जाएं, इसलिए उनके लिए प्रकाश की व्यवस्था इस रूप में की जाती है। इस प्रथा का बंगाल मे विशेष प्रचलन है। धर्मग्रंथो के अनुसार कार्तिक अमावस्या को भगवान श्री रामचंद्रजी चौदह वर्ष का वनवास काटकर तथा असुरी वृत्तियों के प्रतीक रावण का संहार करके अयोध्या लौटे थे। तब अयोध्यावासियों ने राम के राज्यारोहण पर दीपमालाएं जलाकर महोत्सव मनाया था। इसीलिए दीपावली हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह पर्व अलग-अलग नाम और विधानों से पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि इसी दिन अनेक विजयश्री युक्त कार्य हुए हैं। बहुत से शुभ कार्यों का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना गया है। इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था। विक्रम संवत का आरम्भ भी इसी दिन से माना जाता है। अत- यह नए वर्ष का प्रथम दिन भी है। आज ही के दिन व्यापारी अपने बही-खाते बदलते हैं तथा लाभ-हानि का ब्यौरा तैयार करते हैं।

वास्तव में धनतेरस, नरक चतुर्दशी (जिसे छोटी दीवाली भी कहा जाता है) तथा महालक्ष्मी पूजन- इन तीनों पर्वों का मिश्रण है दीपावली। भारतीय पद्धति के अनुसार प्रत्येक आराधना, उपासना व अर्चना में आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक इन तीनों रूपों का समन्वित व्यवहार होता है। इस मान्यतानुसार इस उत्सव में भी सोने, चांदी, सिक्के आदि के रूप में आधिभौतिक लक्ष्मी का आधिदैविक लक्ष्मी से संबंध स्वीकार करके पूजन किया जाता हैं। घरों को दीपमाला आदि से अलंकृत करना इत्यादि कार्य लक्ष्मी के आध्यात्मिक स्वरूप की शोभा को अविर्भूत करने के लिए किए जाते हैं। इस तरह इस उत्सव में उपरोक्त तीनों प्रकार से लक्ष्मी की उपासना हो जाती है।

लक्ष्मी पूजन

दीपावली पर लक्ष्मीजी का पूजन घरों में ही नहीं, दुकानों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में भी किया जाता है। कर्मचारियों को पूजन के बाद मिठाई, बर्तन और रुपये आदि भी दिए जाते हैं। दीपावली पर कहीं-कहीं जुआ भी खेला जाता है। इसका प्रधान लक्ष्य वर्ष भर के भाग्य की परीक्षा करना है।

इस दिन धन के देवता कुबेरजी, विघ्नविनाशक गणेशजी, राज्य सुख के दाता इन्द्रदेव, समस्त मनोरथों को पूरा करने वाले विष्णु भगवान तथा बुद्धि की दाता सरस्वती जी की भी लक्ष्मी के साथ पूजा करें। इस प्रथा के साथ भगवान शंकर तथा पार्वती के जुआ खेलने के प्रसंग को भी जोड़ा जाता है, जिसमें भगवान शंकर पराजित हो गए थे। जहां तक धार्मिक दृष्टि का प्रश्न है आज पूरे दिन व्रत रखना चाहिए और मध्यरात्रि में लक्ष्मी-पूजन के बाद ही भोजन करना चाहिए। जहां तक व्यवहारिकता का प्रश्न है, तीन देवी-देवों महालक्ष्मी, गणेशजी और सरस्वतीजी के संयुक्त पूजन के बावजूद इस पूजा में त्योहार का उल्लास ही अधिक रहता है। इस दिन प्रदोष काल में पूजन करके जो स्त्री-पुरुष भोजन करते हैं, उनके नेत्र वर्ष भर निर्मल रहते हैं। इसी रात को ऐन्द्रजालिक तथा अन्य तंत्र-मन्त्र वेत्ता श्मशान में मन्त्रों को जगाकर सुदृढ़ करते हैं।

पूजन विधि

लक्ष्मी जी के पूजन के लिए घर की साफ-सफ़ाई करके दीवार को गेरू से पोतकर लक्ष्मी जी का चित्र बनाया जाता है। लक्ष्मीजी का चित्र भी लगाया जा सकता है। संध्या के समय भोजन में स्वादिष्ट व्यंजन, केला, पापड़ तथा अनेक प्रकार की मिठाइयाँ होनी चाहिए। लक्ष्मी जी के चित्र के सामने एक चौकी रखकर उस पर मौली बांधनी चाहिए। इस पर गणेश जी की व लक्ष्मी जी की मिट्टी या चांदी की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए तथा उन्हें तिलक करना चाहिए। चौकी पर छः चौमुखे व 26 छोटे दीपक रखने चाहिए और तेल-बत्ती डालकर जलाना चाहिए। फिर जल, मौली, चावल, फल, गुड़, अबीर, गुलाल, धूप आदि से विधिवत पूजन करना चाहिए।पूजा पहले पुरुष करें, बाद में स्त्रियां। पूजन करने के बाद एक-एक दीपक घर के कोनों में जलाकर रखें।

आरती

ऊँ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता
तुम को निश दिन सेवत, हर विष्णु विधाता....
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि धन पाता
जय लक्ष्मी माता...।।
तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भव निधि की त्राता
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।
जिस घर तुम रहती सब सद्गुण आता
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।
शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता
ऊँ जय लक्ष्मी माता...।।

कैसे शुरू हुई भाई दूज मनाने की परंपरा कथा और महत्व

हिंदुओं के प्रमुख त्योहार में भाईदूज का भी बहुत महत्व है। भाईदूज का पर्व दीपावली से 2 दिन बाद आता है, इस दिन बहन अपने भाई को तिलक कर उसकी लंबी उम्र के लिए हाथ जोड़कर यमराज से प्रार्थना भी करती हैं। स्कंदपुराण में लिखा है कि इस दिन यमराज को प्रसन्न करने से पूजन करने वालों को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। इस साल यह पर्व 29 अक्टूबर को मनाया जा रहा है। इसको मनाए जाने के पीछे एक पौराणिक कथा भी प्रचलित है।

यम-यमुना की कहानी

शास्त्रों के अनुसार भगवान सूर्य नारायण और संज्ञा के दो संतानें- एक पुत्र यमराज और दूसरी पुत्री यमुना थी। मगर एक समय ऐसा आया जब संज्ञा सूर्य का तेज सहन कर पाने में असमर्थ होने के कारण उत्तरी ध्रुव में छाया बनकर रहने लगी। जिसके कारण ताप्ती नदी और शनिदेव का जन्म हुआ। उत्तरी ध्रुव में बसने के बाद संज्ञा (छाया) का यम व यमुना के साथ व्यवहार में अंतर आ गया। इससे व्यथित होकर यम ने अपनी नगरी यमपुरी बसाई। वहीं यमुना अपने भाई यम को यमपुरी में पापियों को दंड देते देख दुःखी होती, इसलिए वह गोलोक में निवास करने लगीं लेकिन यम और यमुना दोनों भाई-बहन में बहुत स्नेह था।

इसी तरह समय व्यतीत होता रहा, फिर अचानक एक दिन यम को अपनी बहन यमुना की याद आई। यमराज अपनी बहन यमुना से बहुत प्रेम करते थे, लेकिन काम की व्यस्तता के चलते अपनी बहन से मिलने नहीं जा पाते थे। फिर कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन यमुना ने भाई यमराज को भोजन के लिए निमंत्रण देकर, उन्हें अपने घर आने के लिए वचनबद्ध कर लिया। ऐसे में यमराज ने सोचा कि मैं तो प्राणों को हरने वाला हूं। मुझे कोई भी अपने घर नहीं बुलाना चाहता। बहन जिस सद्भावना से मुझे बुला रही है, उसका पालन करना मेरा धर्म है। बहन के घर आते समय यमराज ने नरक निवास करने वाले जीवों को मुक्त कर दिया। यमराज को अपने घर आया देखकर यमुना की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

यमुना ने मांगा था वरदान

यमुना ने स्नान के बाद पूजन करके, स्वादिष्ट व्यंजन परोसकर यमराज को भोजन कराया। यमुना द्वारा किए गए इस आतिथ्य से यमराज ने प्रसन्न होकर बहन को वर मांगने का आदेश दिया। फिर यमुना ने कहा कि, 'हे भद्र! आप प्रति वर्ष इसी दिन मेरे घर आया करो और मेरी तरह जो बहन इस दिन अपने भाई को आदर-सत्कार करके टीका करे, उसे तुम्हारा भय न रहे।' यमराज ने तथास्तु कहकर यमुना को अमूल्य वस्त्राभूषण देकर यमलोक की ओर प्रस्थान किया। तभी से इस दिन से ये पर्व मनाने की परंपरा चली आ रही है। इसी कारण ऐसी मान्यता है कि भाईदूज के दिन यमराज तथा यमुना का पूजन भी अवश्य करना चाहिए।

भाईदूज का धार्मिक महत्व

धर्म ग्रंथों के अनुसार, कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमुना ने अपने भाई यम को आदर-सत्कार स्वरूप वरदान प्राप्त किया था, जिस वजह से भाईदूज को यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। दरअसल यमराज के वर अनुसार जो व्यक्ति इस दिन यमुना में स्नान करके, यम का पूजन करेगा, मृत्यु के पश्चात उसे यमलोक में नहीं जाना पड़ेगा। वहीं सूर्य की पुत्री यमुना समस्त कष्टों का निवारण करने वाली देवी स्वरूपा मानी गई हैं। इस कारण यम द्वितीया के दिन यमुना नदी में स्नान करने और यमुना व यमराज की पूजा करने का विशेष महत्व है। इस दिन बहन अपने भाई को तिलक कर उसकी लंबी उम्र के लिए हाथ जोड़कर यमराज से प्रार्थना भी करती हैं। पुराणों के अनुसार, इस दिन की गई पूजा से यमराज प्रसन्न होकर मनोवांछित फल प्रदान करते हैं।

THARWANI INFRASTRUCTURES
WE ASPIRE YOUR DREAMS
tharwaniinfrastructures.com
MahaRERA registration number: P51700049879 available on the website https://maharera.mahaonline.gov.in
P51700049879
KALYAN'S ICONIC
3 in One Landmark
OFFICES
HALLMARK OF EMIRATES
VEDANT CONNECT
PREM AUTO KALYAN
23 STOREY
OFFICES FROM 220 - 1551 SQFT
Starting @ ₹69.95 L* onwards
85509 98836
SHOWROOMS • COMMERCIAL • OFFICES • CLINICS • BANQUET • ROOFTOP RESTAURANT

दीपावली के महापर्व की आप सभी को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...
श्री कुमार आयलानी
भाजपा विधायक, उल्हासनगर विधानसभा
श्रीमती मीना कुमार आयलानी
पूर्व महापौर- उल्हासनगर महानगरपालिका

शुभ दीपावली
श्री राम पारवानी (चार्ली)
भाजपा नेता, उल्हासनगर
श्री निखिल राम पारवानी
युवा समाजसेवी व उद्योगपति

भारतीय जनता पार्टी, उल्हासनगर की ओर से आप सभी को
दीपावली के पावन पर्व
की हार्दिक शुभकामनाएं...
श्री प्रशांत पाटील
महासचिव, भाजपा महाराष्ट्र प्रदेश ओबीसी मोर्चा

दीपावली महापर्व व नये वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री दीपक छतलानी
अध्यक्ष :- उल्हासनगर शॉपकीपर्स एसोसिएशन.
अध्यक्ष :- अमन शॉपकिपर्स एसोसिएशन, अमन टाकिज रोड, उल्हासनगर-2.
अध्यक्ष:- दादा दयालदास छतलानी फाउंडेशन (रजि.).
महासचिव :- उल्हासनगर शहर जिला भाजपा
M/s. Bhoomi Developers
Builders & Developers
Office - Shop no 1, kithani apt, Bk No 488, Aman Talkies Road, Near Nehru Chowk, Ulhasnagar-2 Mb.No. 9850760405

भारतीय जनता पार्टी,
उल्हासनगर की ओर से
आप सभी को
दीपावली के पावन पर्व
की हार्दिक शुभकामनाएं...
श्री राजेश वधरिया
-: अध्यक्ष:-
उल्हासनगर शहर जिला भारतीय
जनता पार्टी

।। दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा ।।
शिवसेना
मा. एकनाथ शिन्दे साहेब
उप-मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र शासन
डॉ.श्रीकान्त शिन्दे साहेब
खासदार, कल्याण लोकसभा क्षेत्र
श्री विजय पाटिल
पूर्व स्थायी समिति सभापति,
उल्हासनगर मनपा
'आनंद' रिसोर्ट और वॉटर पार्क
पालेगांव, आनंदनगर, एमआयडीसी हाईवे, अंबरनाथ (पू.)
युवराज विजय पाटील
युवा सेना कल्याण उपजिल्हा प्रमुख
श्री रवि पाटील
युवा समाजसेवक
मिनाक्षी रवि पाटील
मा. नगरसेविका, उमनपा

शिवसेना
॥ जय महाराष्ट्र ॥
साहेब
दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा!
मा. एकनाथ शिन्दे साहेब
उप-मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र शासन
डॉ.श्रीकान्त शिन्दे साहेब
खासदार, कल्याण लोकसभा क्षेत्र
श्री अरूण आशान
शिवसेना कल्याण उपजिल्हा प्रमुख
श्रीमती लीलाबाई आशान
पूर्व महापौर, उमनपा

HAPPY Diwali
दीपावली के महापर्व की आप सभी को
हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...
श्री सुमित चक्रवर्ती
यूटीए अध्यक्ष व उद्योगपति
श्री दीपक राजानी
समाजसेवक
श्री प्रभु लहाने
समाजसेवक, उल्हासनगर
श्री आकाश चक्रवर्ती
टीओके युवा नेता
मयूर प्रभू लहाने
युवा समाजसेवक

कब होती है मां लक्ष्मी की कृपादृष्टी...

दीपावली पर लक्ष्मी जी आराधना कर सुख-समृद्धि, धन-ऐश्वर्य की कामना करने वाले असंख्य लोग बार-बार खाली हाथ रह जाते हैं, क्योंकि लक्ष्मी जी केवल दीपावली पर पूजन भर से प्रसन्न नहीं होती और आसानी से हर किसी पर कृपा नहीं करती। आखिर क्यों? लक्ष्मी जी के शब्दों में - जहां धर्म होता है, वहीं मैं निवास करती हूँ। जो अधर्म को त्याग कर धर्म ग्रहण करता है, उसी को मैं प्राप्त होती हूं। जो दान देते हैं, वेदों का अध्ययन करते हैं, अतिथि सत्कार करते हैं और सत्य का पालन करते हैं, उनके यहां मैं (लक्ष्मी) निवास करती हूं। जो सूर्योदय से पूर्व जाग जाते हैं, सूर्यास्त से पहले नहीं सोते, जो दीन, अनाथ, दुर्बल, रोगी और स्त्रियों पर दया करते हैं, जो धर्म परायण हैं, जिनके घर नित्य होम होता है, तुलसी, गौ और ब्राह्मण की पूजा होती है, जो परस्पर कलह नहीं करते, एक-दूसरे की सहायता करते हैं, माता-पिता गुरू और वृद्धजनों की उपासना करते हैं उनके यहां मैं निरंतर वास करती हूँ। जो सत्य परायण होते हैं, त्याग, दान और क्षमा से संपन्न होते हैं, अहंकार रहित, सहृदयी, पावन, करूणाशील, मृदुभाषी के घर को छोड़कर मैं कभी नहीं जाती। निद्रा, आलस्य, अप्रीति, ईर्ष्या, लापरवाही, खेद ये अवगुण जिनमें नहीं होते, उनके यहां मैं प्रसन्नतापूर्वक वास करती हूं। जो अधर्म से धन एकत्रित करते हैं, जो पुत्र पिता की आज्ञा का पालन और माता-पिता, वृद्ध, आचार्य, अतिथि और गुरू का सम्मान नहीं करते, उनके घरों में मैं कभी वास नहीं करती। जिनके घरों में भोजन ढका हुआ नहीं रहता, जो दूध को खुला छोड़ देते हैं और जूठे हाथों से दूध-घी आदि ले लेते हैं, जो स्त्रियां गंदी रहती हैं, घर की वस्तुओं को इधर-उधर फैलाकर रखती हैं, जिनमें उत्तम विचार नहीं होते, जो सदा पति के प्रतिकूल बातें करती हैं, जिन्हें दूसरों के घरों में रहना अधिक पसंद हैं, जिनमें न धैर्य है और न लज्जा, जो स्वभाव से निर्दयी और शरीर से अपवित्र होती है। काम-काज में जिनका मन नहीं लगता, जो सदा लड़ाई-झगड़ा किया करती है और अधिक सोती हैं, मैं उनके पास कभी नहीं रहती, उन्हें छोड़कर चली जाती हूं। जो मेरा पूजन करते हैं, उनके यहां मैं निवास करती हूं और जहां मैं रहती हूं वहां मेरे समान तेज वाली, मेरे समान गुणवाली आठ देवियां और रहती हैं। उनके नाम हें -श्रद्धा, धृति, आशा, शान्ति, विजयी, संतति और क्षमा। हम सब आठों देवियां अधर्मी पुरूषों को त्यागकर धर्म परायण पुरूषों के साथ रहती हैं।

نوجیون کو آپریٹو بئنک لمیٹید

NAV JEEVAN CO-OP. BANK LTD.

THE NAV JEEVAN CO.OP. BANK LTD. ESTD. 1985

Services Available

- Different types of Deposits schemes with attractive Deposits Rates.
- All types of Loans & Advances facilities with competitive Rate
- 24x7 NEFT / RTGS Services.
- Safe and secure Moblie Banking Service with NEFT & RTGS Services.
- Franking Service in Ulhasnagar and Thane
- Insurance service through corporate Partners.

-: Upcoming Service :-
Blocking & Unblocking ATM cards through SMS.

Head Office : Bhawani Saw Mills Compound, Ulhasnagar-3.

Tel.No. 0251-2572101, 2568541/ Fax 2567523

Visit us at : www.navjeevanbank.com

उत्सवधर्मिता भारतीय संस्कृति का सनातन संस्कार रहा है। जीवन रस का सामूहिक गान ही त्यौहारों की मूल संवेदना है। इस रूप में दीपावली आर्य संस्कृति की महत् गरिमा से मंडित, दीपों के प्रकाश का महान् सांस्कृतिक पर्व है। युगों से ज्ञान का यह आलोक-प्रवाह सभ्यता के घाटों को प्रदीप्त करता रहा है। आलोक पर्व, दीप पर्व, प्रकाश पर्व, दीपोत्सव, दीपमालिका, दीपावली, सुखरात्रि या यक्षरात्रि आदि अनेक नामों से विख्यात यह पर्व आत्मोद्धार का प्रतीक होने के साथ-साथ तपोनिष्ठ जीवन की गरिमा भी संजोता है।

दीपावली हमारी ज्ञानगामिनी सांस्कृतिक धरोहर है। यह उतनी ही पुरानी एवं प्राचीन है, जितनी कि स्वयं हमारी संस्कृति। हमारी संस्कृति में सुख हो या दु:ख-दोनों अवस्थाओं में प्रकाश करने की परंपरा रही है। वैदिक काल में यह प्रकाश अग्नि रूप में था, बाद में मंदिर के आरती-दीप के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। इस प्रकार वैदिक काल से वर्तमान तक दीपों की गौरवमय गरिमा से संयुक्त इस पर्व की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं मौलिक महत्ता के आलोक में दीपावली का अनुष्ठान किया जाता रहा है। एक ओर दीपावली जहां बुराई पर अच्छाई की जीत एवं भाईचारे का पर्व है, वहीं दूसरी ओर अंधकार को निराशा और प्रकाश को आशा का प्रतीक मानकर दीपों की श्रृंखला प्रज्वलित कर अंधकार दूर भगाने की प्रवृत्ति का त्यौहार है। दीपावली आत्म-उजास की थाती है। मान्यता है कि होली महोत्सव है और दशहरा महानुष्ठान, जबकि एकमात्र दीपावली ही संपूर्ण अर्थों में महापर्व है।

अमावस्या को आयोजित होने वाला दीपावली का पर्व महालक्ष्मी के आह्वान के साथ ही मानव के द्वारा अज्ञान और अंधकार के पराजय एवं पराभव का पर्व है। इस दिन दीपों का प्रकाश कर हम दीप प्रज्वलन की पुरातन परंपरा को गतिमान बनाते हैं तथा दीप्तिरूप प्रकाश के सतोगुणी स्वरूप से आत्मा का साक्षात्कार कराते हैं। दीपदान की प्रथा समस्त विश्व में पुरातन काल से विद्यमान रही है। पहले वनस्पति पूजा की शुरुआत हुई। तत्पश्चात् ज्योतिर्मय लिंग की पूजा के साथ प्रदीप की तेजोमय आभा एकीभूत हो गई। शास्त्रों की उक्ति है, 'दीपो ज्योति: जनार्दन:।' दीप हमारी आस्था के सबसे सनातन प्रमाण हैं। महाकवि अश्वघोष ने मोक्ष की उपमा दीपक की निर्वाण दशा से दी है। कालजयी महाकवि कालिदास प्रदीप्त दीपों की कतारों को देखकर कह उठते हैं, 'प्रवर्तिनो दीप इव प्रदीपात्।'

दीपावली का धार्मिक पर्व के रूप में सर्वप्रथम सम्यक् विवेचन भविष्य पुराण में मिलता है। मात्र लौकिक मान्यताओं, वैभव एवं प्रदर्शन से पृथक पद्म पुराण ने इस पर्व को शालीन एवं सुसंस्कारित आवरण पहनाकर धार्मिकता एवं सात्विकता से ज्योति मंडित किया है। अन्य साहित्य धाराओं में दीपावली का लौकिक परिदृश्य प्रकट होता है। गृह्य-सूत्रों के अनुसार चंद्र संवत्सर नववर्ष के प्रारंभ होने के कारण दीप पर्व पर सफाई आदि की जाती थी। बुद्धघोष का राजगृह इसी महापर्व पर सजता था और धम्मपद अल्प कथा के अनुसार कौमुदी महोत्सव का आयोजन इसी शुभ पर्व पर रात्रि भर चलता था। दीपावली की पर्व-श्रृंखला संस्कृति की अनेक

दीपावली : दीपों के प्रकाश का महान सांस्कृतिक पर्व

धाराओं को स्थान देती है। यह पर्व एक साथ पांच पर्वों की लड़ी है। पहला पर्व त्रयोदशी को धनतेरस में पड़ता है। पौराणिक कथानुसार सागर मंथन के समय अमृत घट उत्पन्न हुआ था, जिसे विष्णु के एक अंश धनवंतरि को लेकर प्रकट हुए थे। इसी स्मृति में धनतेरस की व्रत-पूजा होती है। त्रयोदशी की संध्या में यमदीप दान का अनुष्ठान किया जाता है। इसके बाद का दिन नरक चतुर्दशी, पितरों को अर्ध्यदान देने का पर्व है। इसके पीछे मान्यता है कि श्रीकृष्ण ने इसी दिन नरकासुर का वध किया था। अमावस्या की रात्रि में दीपोत्सव मनाया जाता है। धर्मसिंधु के अनुसार इस दिन मनुष्य देवों से अपने पितरों की परम गति के लिए प्रार्थना करते हैं। दीपावली के बाद प्रतिपदा आती है। यह प्रारंभ में नवान्न पूजा का पर्व था, जो बाद में अन्नकूट पूजा में परिवर्तित हो गया।

लोक-परंपरा में दीपावली की रात को मुख्यतया लक्ष्मी-गणेश की संयुक्त पूजा का विधान है। यह वस्तुत: समृद्धि एवं सद्बुद्धि दोनों की आराधना के साथ श्रेष्ठ मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना है। लक्ष्मी समृद्धि, विभूति एवं संपत्ति की देवी है और गणपति सद्बुद्धि एवं सद्ज्ञान के सर्वसमर्थ देवता। समृद्धि का तात्पर्य विलासिता नहीं है, बल्कि यह सत्कर्मों में नियोजन है। सद्बुद्धि के प्रकाश में ही समृद्धि का सुनियोजन संभव है। अत: सद्बुद्धि के अभाव में समृद्धि हितकारी नहीं हो सकती और विपुल बुद्धि भी धनाभाव के कारण मंद पड़ जाती है। वैदिक पुरुषसूक्त से पुराणों तक लक्ष्मी, परमेश्वर की ऐश्वर्य-शक्ति के रूप में स्वीकृत है। इस संबंध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि लक्ष्मी केवल बाहरी वस्तु नहीं है, यह वस्तुत: आत्मविभूति है जो बीज रूप में सारे प्राणियों के अंदर विद्यमान है, परंतु जो अपनी आत्मज्योति को प्रकाशित कर पाता है, वही इससे यथार्थ रूप में लाभान्वित होता है। महर्षि मार्कंडेय भी इसे कोई बाह्य वस्तु न बताकर आंतरिक तत्व की संज्ञा देते हैं। मानव के आभ्यंतर में जो सार्वभौम शक्ति विद्यमान है, वही बाह्य संपत्ति का अर्जन-विसर्जन करती रहती है। तभी तो लक्ष्मी कमल पर आसीन है। कमल विवेक का प्रतीक है, पंक से उत्पन्न होकर भी पंक रहित, स्वच्छ, पावन, सुगंधित। संपत्ति तभी वरेण्य है, जब वह पवित्रता पर आधारित हो।

दीपावली अर्थात् दीपों की अवली यानी कि प्रकाशित दीपों की पंक्तियां, जिन्हें देखकर कुछ यूं लगता है कि नन्हें-नन्हें दीप संघर्षशील मानवीय चेतना के प्रमाण बनकर जग से तम को हर लेने की कोशिश करने में जुटे हैं। इन प्रकाशित दीपों से यह सत्य भी प्रकट होता है कि जीवन में स्नेह (प्रेम) बना रहे तो प्रकाश की कमी नहीं पड़ती। भावनात्मक मूल्यों से ज्योतित हो और हमारा प्रत्येक आचरण कर्म और आदर्श से मंडित हो तो न केवल जीवन प्रकाश से पूर्ण होगा, बल्कि हम लक्ष्मी की वैभव-विभूति, उसकी श्री संपदा से भी लाभान्वित होंगे। दीप पर्व के अनुष्ठान की सार्थकता तभी है, जबकि हमारे अंदर ज्ञान और प्रेम की ज्योति जल उठे। इस ज्योति का प्रकाश ही बाह्य जीवन को विभूति और वैभव से संपन्न और सक्षम बनाने में समर्थ है। इस पावन वेला में दीपों की पंक्तियां कुछ इस तरह से जगमगाएं कि विश्व में सद्बुद्धि की उजास बढ़े। सद्बुद्धि का यह उजाला ही समृद्धि को सुरक्षित और विकसित करने का आधार है। सद्ज्ञान और सद्बुद्धि के साथ समृद्धि का समन्वय ही इस पर्व की प्रेरणा है। हमारे जीवन में यह चरितार्थ हो, तभी दीपावली मनाने की सार्थकता है।

शुभ दीपावली
मा. अजित दादा पवार
उपमुख्यमंत्री
महाराष्ट्र शासन
हरकिरण कौर
(सोनिया) धामी
महासचिव - महाराष्ट्र प्रदेश राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी
श्री भरत राजवानी
(गंगोत्री)
पूर्व सभागृह नेता, उल्हासनगर
महानगरपालिका, उल्हासनगर

जगदंबा
नागरी सहकारी पतसंस्था मर्या., उल्हासनगर
घर कर्ज
सोने तारण कर्ज
वाहन कर्ज
व्यवसायिक कर्ज
मुदत ठेव
सर्वे जनाः सुखिनो भवंतु
जडते एक अतूट नाते
बचत ठेव
३२ वा
वार्षिक अहवाल
सन २०२४-२०२५
प्रगतीचा चढता क्रम
ऑडिट वर्ग 'अ'
कार्यक्षेत्र ठाणे जिल्हा
आमच्या संस्थेतला आपला एक एक पैसा... सोन्यापरी मौल्यवान जैसा...
``प्रत्येक सभासदाला विकासाची संपूर्ण सेवा देणारी संस्था''
शुभ दीपावली
-: कार्यालय:-
बॅ.नं.सी-35 जवळ,
जगदंबा मंदिराच्या मागे,
कौशलनगर,
उल्हासनगर-421003.
दूरध्वनी: 7385154209 / 9881275344

दीपावली के महापर्व की आप सभी को
हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...
एडवोकेट श्री प्रकाश कुकरेजा
राष्ट्रीय अध्यक्ष-प्रजा कृपा पार्टी
पूर्व उपायुक्त (रिटायर्ड), उल्हासनगर मनपा
प्रजा कृपा पार्टी
से जुडीये और जोडिये
मेरा शहर मेरा देश
2, Hari Om Apartment, B.K. C-33/ R-124, Opp. Chopra Court, Ulhasnagar-421003.
Mob.: 9422073950, Ph.: 0251-2701718
Email : prajakripa1955@gmail.com, Website :- prajakripaparty.in

आप सभी को दीपावली व
नये वर्ष की हार्दिक
शुभकामनाएं
श्री अजित माखीजानी
टीओके नेता, उल्हासनगर

दीपावली के महापर्व की आप सभी को
हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...
डॉ. निलेश वजिरानी
प्रेसिडेंट:- उल्हासनगर तालुका
क्रिकेट एसोसिएशन.
ड्रिस्ट्रीक सेक्रेटरी रोटरी डिस्ट्रीक 3142

दीपावली के महापर्व की
आप सभी को हमारी ओर से
हार्दिक शुभकामनाएं...
शुभांगिनी राजेश निकम
मा. नगरसेविका, उ.मनपा
कमलेश निकम
मुख्य प्रवक्ता, TOK
अश्विनी निकम
युवती नेत्या, TOK

शुभ दीपावली
श्री संजय सिंह (चाचा)
समाजसेवक उल्हासनगर
श्रीमती हेमा पिंजानी
समाजसेविका, उल्हासनगर

।। दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा ।।
मा. एकनाथ शिन्दे साहेब
उप-मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र शासन
डॉ.श्रीकान्त शिन्दे साहेब
खासदार, कल्याण लोकसभा क्षेत्र
शिवसेना
डॉ. बालाजी किणीकर
आमदार अंबरनाथ विधानसभा मतदारसंघ
drbalajikinikarofficial

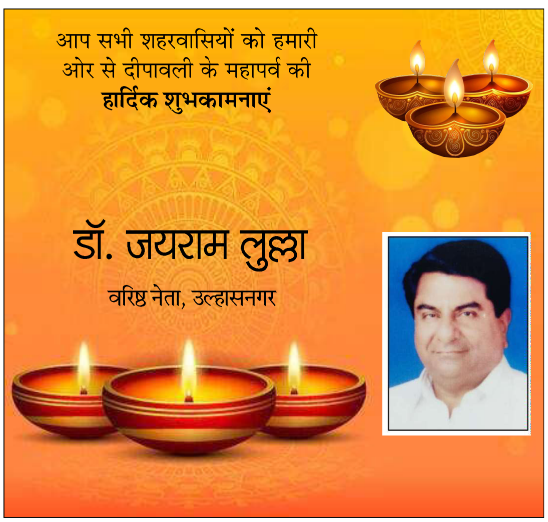
आप सभी शहरवासियों को हमारी
ओर से दीपावली के महापर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. जयराम लुल्ला
वरिष्ठ नेता, उल्हासनगर

आप सभी शहरवासियों को हमारी
ओर से दीपावली के महापर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
जय झुलेलाल
जय सिंधीयत
श्री शंकर
नागरानी
राष्ट्रीय अध्यक्ष:-
अखिल भारतीय सिंधी
समाज (रजि.)

आप सभी शहरवासियों को हमारी
ओर से दीपावली के महापर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
श्री राजू जग्यासी
पूर्व भाजपा नगरसेवक,

आप सभी को दीपावली व नये वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री सोनू चावला
युवा समाजसेवक, उल्हासनगर

आप सभी को दीपावली व नये वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं
स्वाद सिंधुनगर का...
किशोर पेटिस
शुद्ध और स्वादिष्ट फूड के
लिए विश्वास का एक ही नाम
गुलाब जामुन,रगड़ा पेटिस,सम्बोसा,
दही-वडे,सेव-पुरी,पानी-पुरी,दही-पुरी
किशोर वीरवानी
पिकी वीरवानी काली वीरवानी
किशोर पेटीस, गोल मैदान के पास, उल्हासनगर-1

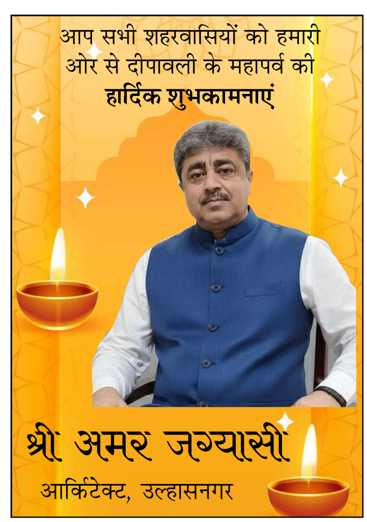
आप सभी शहरवासियों को हमारी
ओर से दीपावली के महापर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
श्री अमर जग्यासी
आर्किटेक्ट, उल्हासनगर

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री जमनादास खूबचंद पुरस्वानी
भारतीय जनता पार्टी
141-विधानसभा चुनाव प्रमुख

आप सभी को दीपावली के महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री दीपक (टोनी) लक्ष्मणराज सीरवानी
पूर्व स्थायी समिती सभापति, उल्हासनगर मनपा
माता साहेब स्व.श्रीमती कविता लक्ष्मणराज सीरवानी
अध्यक्ष - गुरु गुलराज साहब मैन्यूफेक्चर्स एसोसिएशन.
संस्थापक -गुल गुलराज साहब सेवा समिति, उल्हासनगर

दीपावली के महापर्व की आप सभी को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...
महासाहित्य
श्री महेश सुखरामानी
पूर्व कार्याध्यक्षः-
महाराष्ट्र राज्य
सिंधी साहित्य अकादमी

दीपावली के महापर्व की आप सभी को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.
श्री जमनु पुरस्वानी
वरिष्ठ भाजपा नेता, उल्हासनगर
श्री रोशन पुरस्वानी
युवा भाजपा नेता, उल्हासनगर

आप सभी को
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री जगदीश तेजवानी
-: अध्यक्षः-
उल्हासनगर व्यापारी एसोसिएशन

Wish U & Your Family
a Very Happy Diwali
NEW ENGLISH HIGH SCHOOL & JUNIOR COLLEGE
Shri
Prakash
Chellaram
Gurnani
'Sir'

With Best Compliments From
HAPPY DIWALI
Dr. P.K. Chandiramani
.B.B.S.(Bom.)
Reg.No.2004/10/3615
3, Choithram Shopping Centre,
Near Govt. Hospital,
Ulhasnagar-421004.
Dispensary : 258 02 02 /
Residence : 252 03 03

शुभ दीपावली
श्री जॉनी कारिरा
शिवसैनिक,
उल्हासनगर

आप सभी को हमारी ओर से दीपावली के महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री गिरिष शिवनानी
भवन निर्माता व समाजसेवक,
उल्हासनगर

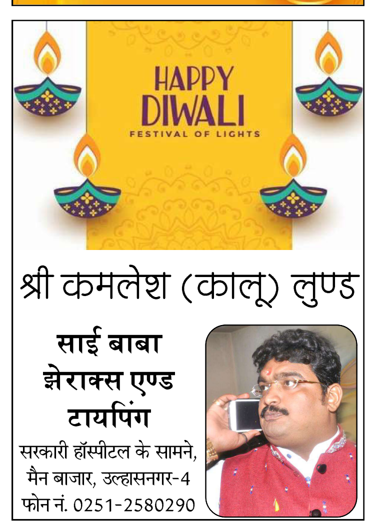
HAPPY DIWALI
FESTIVAL OF LIGHTS
श्री कमलेश (कालू) लुण्ड
साई बाबा झेराक्स एण्ड टायपिंग
सरकारी हॉस्पीटल के सामने,
मैन बाजार, उल्हासनगर-4
फोन नं. 0251-2580290

राम के वनवास लौटने से पहले भी मनाई जाती थी दीपावली

खुशी के प्रतीक का पर्व दीपावली आदि काल से मनाई जाती है। इस दिन कई इतिहास भी जुड़े है। एक तरफ जहां भगवान् श्री कृष्ण इसी दिन शरीर मुक्त हुए। जैन मत के अनुसार अंतिम तीर्थकर भगवान् महावीर, महर्षि दयानंद सरस्वती ने दीपावली को ही निर्वाण प्राप्त किया। लेकिन हिन्दुओं का मत है कि दीपावली के दिन रामचंद्र जी सीता और लक्ष्मण के साथ विजयी होकर अयोध्या वापस लौटे थे। अयोध्या में उनके लौटने की खुशी में घी के दीपक जलाए गए और खुशियां मनाई गई। लेकिन दीपावाली उससे पहले भी मनाई जाती थी।

सबसे पहले दीपावली सतयुग में ही मनाई गई। जब देवता और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो ऐरावत, चंद्रमा, परिजात, रंभा, वारुणी आदि 14 रत्नों के साथ हलाहल विष भी निकला। साथ ही धन्वंतरि भी प्रकट हुए। इसी से तो स्वास्थ्य के आदिदेव धन्वंतरि की जयंती से दीपोत्सव का महापर्व शुरू हो जाता है। उसके बाद में महामंथन से देवी महालक्ष्मी का पाताल लोक से आई थी। सभी देवी देवाताओं ने उनके स्वागत में पहली दीपावली मनाई थी।

रामचंद्र के अयोध्या लौटने क खुशी में दीपावली मनाई जाती है तो राम की पूजा क्यों नहीं की जाती। इस दिन लक्ष्मी पुत्र गणेश, विष्णु पत्नी लक्ष्मी, सरस्वती की पूजा क्यों की जाती है। यह समुद्रमंथन से जुडा हुआ किस्सा है। उस दौरान देवताओं और राक्षसों के बीच आए दिन युद्ध होता रहता था। राक्षसों पर देवता भारी पड़ते थे तो कभी राक्षस। एक बार देवता राक्षसों पर भारी पड़ रहे थे। जिसके कारण राक्षस पाताल लोक में भागकर छिप गए।

देवताओं से राक्षस शाक्तिशाली नहीं थे। देवाताओं पर महालक्ष्मी की कृपा रहती थी। लक्ष्मी अपने 8 रूपों के साथ इंद्रलोक में थी। जिसके कारण देवता अंहकार से भरे हुए थे। दुर्वासा ऋषि एक दिन समामन की माला पहनकर स्वर्ग की तरफ जा रहे थे। रास्ते में इंद्र आते हुए दिखाई दिए। ये अपने ऐरावत हाथी पर सवार थे। इंद्र को देखकर ऋषि ने प्रसन्न होकर गले की माला उतार कर इंद्र की ओर फेंकी। इंद्र ने माला की तरफ से ध्यान नहीं दिया।

यह मामला ऐरावत के पैर तले कुचल गई। इससे दुर्वासा क्रोधित हो गए। दुर्वासा ने इंद्र को श्राप देते हुए कहा कि जिस अंहकार में डूबे हो, वह तुरंत पाताललोक चली जाएगी। श्राप के कारण लक्ष्मी स्वर्गलोक छोड़कर पाताल लोक चली गई। लक्ष्मी के जाने के बाद में वता कमजोर हो गए। उधर राक्षस माता लक्ष्मी को देखकर खुश हो गए। इंद्रलोक पाने की जुगत राक्षस भिड़ाने लगे। उधर लक्ष्मी के जाने के बाद में इन्द्र देवगुरु बृहस्पति और अन्य देवाताओं के साथ ब्रह्माजी के पास गए तो ब्रह्माजी ने लक्ष्मी को वापस बुलाने के लिए समुद्र मंथन की युक्ति बताई।

लक्ष्मी को बुलाने के लिए देवताओं और असुरों के बीच में समुद्र मंथन हुआ। इस मंथन से एक दिन महालक्ष्मी निकली। उस दिन कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या थी। लक्ष्मी को पाकर देवता एक बार फिर से बलशाली हो गए। लक्ष्मी के आगमन पर खुशी मनाई गई। देवताओं ने उनकी आराधना की। तभी से कार्तिक आमावस्या के दिन महालक्ष्मी की पूजा की जाती है। अंहकार में कोई गलती न कर दें, इसलिए सरस्वती और गणेश जी की पूजा की जाती है।

पटाखे जलाते समय असावधानी पड़ सकती है भारी, जानिए जलने-चोट लगने पर तुरंत क्या करें?

दीपावली का त्योहार कई मामलों में खास है। आपसी मेलजोल को बढ़ाने से लेकर मिठाइयां, रोशनी, सजावट और उत्साह इस उत्सव को विशेष रूप देते हैं। इसके अलावा जो चीजें इस पर्व को आनंददायी बनाती हैं वह हैं- पटाखे और रोशनी।

हालांकि पटाखों को जलाते समय विशेष सावधानी और सतर्कता बरतने की आवश्यकता होती है। इस दौरान बरती गई लापरवाही के कारण हर साल दुर्घटनाओं के मामले सामने आते रहे हैं। पटाखों को असावधानी से जलाने के कारण चोट लगने-जलने का खतरा हो सकता है। विशेषकर छोटे बच्चों में इसका जोखिम अधिक देखा जाता रहा है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, हर साल दिवाली के त्योहार के दौरान पटाखों से घायल होने के कई मामले देखे जाते रहे हैं। इस प्रकार के जोखिमों से बचे रहने के लिए सुनिश्चित करें कि बच्चे पटाखों से दूर रहें। यदि आप या परिवार का कोई सदस्य पटाखे जलाते समय चोट का शिकार हो जाता है तो उसे तुरंत प्राथमिक उपचार दें। त्वरित उपचार से इसके दीर्घकालिक जोखिमों को कम करने में मदद मिल सकती है।

आइए जानते हैं कि पटाखों से होने वाले किसी हादसे से बचने के लिए किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए और जलने-चोट लगने पर तुरंत क्या कर सकते हैं?

पटाखे जलाते समय बरतें सावधानी

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, पटाखों से कई प्रकार के नुकसान का जोखिम होता है, ऐसे में पटाखों को नहीं जलाना चाहिए। यदि आप जला भी रहे हैं तो सिर्फ उन्हीं पटाखों का इस्तेमाल करें जिनसे प्रदूषण का जोखिम कम होता है। इसके अलावा पटाखे जलाते समय हर स्तर पर चोट से बचाव के उपाय करते रहना चाहिए, जिससे किसी भी प्रकार के हादसे से बचा जा सके। बच्चों को बड़ों की देखरेख में ही पटाखे फोड़ने चाहिए। हमेशा घर के बाहर पटाखे फोड़ें।

पटाखों से आग लगने के खतरे को कम करने के लिए वहां बाल्टी में पानी या रेत रखें। माचिस से सीधे पटाखे न जलाएं, इसके लिए किसी लंबी डंडी का प्रयोग करें, जिससे पटाखों से आप एक दूरी बनाकर रखे सकें। आइए जानते हैं कि जलने-चोट लगने पर तुरंत क्या किया जाना चाहिए?

कपड़े-

दिवाली के दिन पटाखे जलाते समय बच्चों को हमेशा कॉटन के कपड़े ही पहनाएं। बच्चों को कभी भी सिंथटिक कपड़े पहनाकर पटाखे जलाने के लिए न भेजें। इस तरह के कपड़े में आग लगने की संभावना ज्यादा बनी रहती है।

पटाखों की क्वॉलिटी पर भी ध्यान-

पैसे बचाने के लिए कभी भी सस्ते पटाखे नहीं खरीदें। पटाखे हमेशा लीगल मैन्युफैक्चरर से ही खरीदें। पटाखों को जलाने से पहले उसके पैकेट पर लिखे सारे निर्देशों को ध्यान से पढ़ें। ऐसा करने से दिवाली के दिन पटाखों की वजह से होने वाले हादसों को कम किया जा सकता है।

हाथ पर न जलाएं पटाखे-

अक्सर देखा जाता है कि कुछ बच्चे अपने हाथ पर लेकर पटाखे जलाने लगते हैं और पटाखे जलाते ही उसे दूर फेंक देते हैं। इससे उनके व दूसरों के चोटिल होने की संभावना काफी हद तक बढ़ जाती है। ऐसा करने से कई बार पटाखा हाथ में ही फट जाता है और बच्चा घायल हो सकता है। ऐसे में पटाखे हमेशा जमीन पर रखकर ही जलाएं।

पैरेंट्स रहें बच्चों के साथ-

दिवाली के दिन पटाखे जलाते समय हमेशा घर का एक बड़ा व्यक्ति बच्चे के साथ रहें। बच्चों को कभी भी खुद से पटाखे जलाने की अनुमति न दें।

खुली जगह पर जलाएं पटाखें-

कई बार ऐसा होता है कि लोग छोटी जगह पर ही पटाखे जलाने लग जाते हैं, इससे दुर्घटना होने की संभावना काफी बढ़ जाती है। पटाखा किसी के घर, बिजली के खंभे या तार पर लगने की वजह से बड़ी हानि कर सकता है। पटाखे हमेशा किसी खुले मैदान या पार्क में ही जलाएं।

क्यों की जाती है गोवर्धन पूजा?

गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा भी कहते है.गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा भी कहते है.

हिंदू धर्म में हर त्योहार का अपना महत्व है. दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजन की परंपरा सदियों से चली आ रही है. कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को गोवर्धन पूजा का पर्व मनाया जाता है. इस दौरान घर के बाहर गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाकर उसकी पूजा की जाती है. गोवर्धन पूजन में गायों की पूजा का भी विशेष महत्व है.

गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा भी कहते है. पर बहुत कम लोग ये जानते हैं कि गोवर्धन पूजा आखिर क्यों की जाती है. गोवर्धन पूजा का महत्व क्या है. तो चलिए आज पंडित इंद्रमणि घनस्याल से गोवर्धन पूजा की कथा को विस्तार से जानते हैं.

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार ब्रज में पूजन कार्यक्रम चल रहा था. सभी ब्रजवासी पूजन कार्यक्रम की तैयारियों में जुटे हुए थे. भगवान श्रीकृष्ण ये सब देखकर व्याकुल हो जाते हैं और अपनी माता यशोदा से पूछते हैं- मैया, ये सब ब्रजवासी आज किसकी पूजा की तैयार में लगे हैं. तब यशोदा माता ने बताया कि ये सब इंद्र देव की पूजा की तैयारी कर रहे हैं.

तब श्रीकृष्ण फिर से पूछते हैं कि इंद्र देव की पूजा क्यों करेंगे, तो यशोदा बताती हैं कि इंद्र देव वर्षा करते हैं और उस वर्षा की वजह से अन्न की पैदावार अच्छी होती है. जिससे हमारी गाय के लिए चारा उपलब्ध होता है.

तब श्रीकृष्ण ने कहा कि इंद्रदेव का वर्षा करना कर्तव्य है. इसलिए उनकी पूजा की जगह गोवर्धन पर्वत की पूजा करनी चाहिए क्योंकि गोवर्धन पर्वत पर गायें चरती हैं. इसके बाद सभी ब्रजवासी इंद्रदेव की जगह गोवर्धन पर्वत की पूजा करने लगे. इससे इंद्रदेव नाराज हो गए और क्रोध में आकर मूसलाधार बारिश करने लगे. जिस वजह से हर तरफ कोहराम मच गया.

सभी ब्रजवासी अपने पशुओं की सुरक्षा के लिए भागने लगे. तब श्रीकृष्ण ने इंद्रदेव का अहंकार तोड़ने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी सबसे छोटी उंगली पर उठा लिया. सभी ब्रजवासियों ने पर्वत के लिए शरण ली. जिसके बाद इंद्रदेव को अपनी गलती का अहसास हुआ. उन्होंने श्रीकृष्ण से मांफी मांगी. इसके बाद से गोवर्धन पर्वत की पूजा की परंपरा शुरू हुई. इस पर्व में अन्नकूट यानी अन्न और गौवंश की पूजा का बहुत महत्व है.

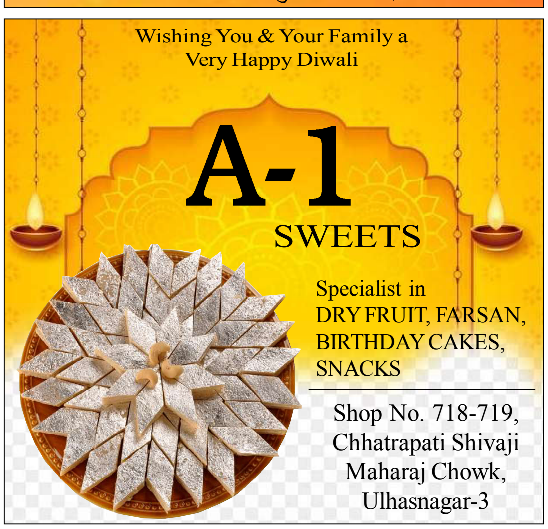

उत्साह, उमंग और आनंद का
महापर्व दीवाली

इस उत्सव को शास्त्रोक्त प्रकार से मनाने की नियम व पद्धति सभी धर्म ग्रंथों में उपलब्ध है। दीपावली का शाब्दिक अर्थ दीपों की पंक्ति या समूह है। उस दिन लोग बड़े उत्साह व उमंग के साथ घर, दुकान, गली, रास्ते, मकान, भवन आदि की सफाई कर सायंकाल सैकड़ों-हजारों दीप जलाकर सजावट करते हैं। इसीलिए यह त्योहार दीपावली के नाम से जाना जाता है। यों तो लोग दीपक प्रतिदिन घर, दुकान, देवालय और पूजन काल में जलाते हैं। किंतु वह दीपावली नहीं कहलाता। अतः दीपावली कोई विशेष उद्देश्य को लेकर है। यह उद्देश्य जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है।

पर्व उत्साह के कारक होते हैं। इनकी महत्ता सर्वव्यापी है। भारत में वर्ष के दिनों से अधिक पर्व की संख्या है। भौतिक साधन के अभाव के पश्चात देश के प्रत्येक जन में अपार जोश का मुख्य स्रोत त्योहार ही हैं। उत्सव में दीपावली का प्रमुख स्थान है। महालक्ष्मी की कृपा के अभाव में किसी भी भौतिकी कार्य अथवा सांसारिक कार्य का होना असंभव है।

इस प्रधान आवश्यकता की पूर्ति हेतु इस पर्व को साधना व उत्साह से संपन्न करने की अपेक्षा सदैव जन मन में रहती है। इस पर्व को प्रकाश पर्व कहने का तात्पर्य भी यही है कि संपन्नता की रोशनी में ही श्रेष्ठ जीवन की संभावना है।

इस अवसर पर निवेश, हिसाब-किताब (बही), यम (पाप कार्य का स्मरण), कुबेर, (बचत व भंडारण), संपत्ति, पूँजी, पर्यावरण-प्रकृति पूजन व संबंधों की महत्ता से बद्ध पंच पर्व मनाए जाते हैं। इन सभी की प्रचुरता या उपलब्धता के उपरांत ही मानवीय जीवन की सफलता निश्चित होना है।

इस उत्सव को शास्त्रोक्त प्रकार से मनाने की नियम व पद्धति सभी धर्म ग्रंथों में उपलब्ध है। दीपावली का शाब्दिक अर्थ दीपों की पंक्ति या समूह है। उस दिन लोग बड़े उत्साह व उमंग के साथ घर, दुकान, गली, रास्ते, मकान, भवन आदि की सफाई कर सायंकाल सैकड़ों-हजारों दीप जलाकर सजावट करते हैं। इसीलिए यह त्योहार दीपावली के नाम से जाना जाता है। यों तो लोग दीपक प्रतिदिन घर, दुकान, देवालय और पूजन काल में जलाते हैं। किंतु वह दीपावली नहीं कहलाता। अत: दीपावली कोई विशेष उद्देश्य को लेकर है। यह उद्देश्य जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है।

युगों से चली आ रही पारंपरिक पर्वों के लिए कोई न कोई शास्त्रीय या पारंपरिक व्यवस्था ही आधार मानी जाती है। दीपावली प्राय: दोनों सिद्धांतों का आधार है। प्रथम यद्यपि भगवान ने गीता में कहा है कि महीनों में मार्गशीर्ष मैं ही हूँ। फिर भी उन्हीं भगवान के वचनानुसार बारह महीनों में कार्तिक मास धार्मिक दृष्टि से उत्कृष्टतम माना गया है। चातुर्मास्य जो भगवान का विश्राम या शयन समय माना जाता है, उसका अंत कार्तिक में ही होता है और देवोत्थान एकादशी को भगवान का जागरण दिन माना जाता है। इस महीने में धर्मनिष्ठ लोग गंगा, काशी, प्रयाग, हरिद्वार में गंगातट पर महीने भर निवास कर पवित्र स्नान का लाभ उठाते हुए अपने मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दीपावली अमावस्या को ही मनाई जाती है। उसका भी कुछ विशेष तर्क है। सूर्य चंद्रमसौ सह पर: सन्निकर्ष अमावस्या। सूर्य और चंद्रमा दोनों अत्यंत सन्निधि में जिस दिन आते हैं, वह अमावस्या तिथि है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से चंद्रमा की कला क्रमश: क्षीण होती हुई अमावस्या को सूर्य और चंद्र दोनों अत्यंत समीप होने से चंद्रमा कलाहीन होकर पुन: सूर्य से पृथक होता हुआ नवीन कला को धारण करता है। इसी अमावस्या से चंद्रमा की नवीन किरणें प्राप्त होती हैं। अत: अमावस्या को अंधकार का अंत और प्रकाश का प्रारंभ दोनों का प्रतीक कहा जा सकता है।

शास्त्रीय और लौकिक उपाख्यान है कि भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका पर विजय प्राप्त कर जब अयोध्या आए तो खुशी में लोगों ने घर-घर, गलियों और मार्गों पर दीपक जलाकर विजयोल्लास का प्रदर्शन किया था।

दीपक लक्ष्मी का प्रतीक है। लक्ष्मीजी प्रकाश, स्वच्छता और पवित्रता को अधिक पसंद करती हैं। अत: दीपावली के साथ ही लक्ष्मी पूजा भी प्रारंभ हुई जो आजकल दीपावली का दूसरा नाम लक्ष्मी पूजन का विशेष त्योहार भी कहा जाता है।

पूर्व में राजाओं के यहाँ शारदीय पूर्णिमा को प्रदोष काल में लक्ष्मी पूजन किया जाता था। राजा लोग रात्रिभर पाशा खेलते थे। और रात्रि जागरण करते थे। उस रात्रि को कोजागरा भी कहते हैं। शास्त्रों में कोजागरा प्रदोषे लक्ष्मी पूजन का भी उल्लेख है। दीपावली की लक्ष्मी पूजा प्रारंभ में वणिव?वृत्ति वालों की थी किंतु धीरे-धीरे सभी ने दीपावली को ही लक्ष्मी पूजन करना प्रारंभ किया। आज सारा समाज ही दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन बड़े उत्साह के साथ करता है।

दीपावली त्योहार की शुरुआत व समापन की अवधि 5 दिनों की होती है। पर्व की शुरुआत धनतेरस से होती है और भ्रातृ द्वितीया को उनका समापन होता है।

धनतेरस की पौराणिक कथा

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन धनतेरस का पर्व पूरी श्रद्धा व विश्वास के साथ मनाया जाता है। धनवंतरी के अलावा इस दिन,देवी लक्ष्मी और धन के देवता कुबेर की भी पूजा करने की मान्यता है। इस दिन को मनाने के पीछे धनवंतरी के जन्म लेने की कथा के अलावा, इसके बारे में एक दूसरी कहानी भी प्रचलित है।

कहा जाता है कि एक समय भगवान विष्णु मृत्युलोक में विचरण करने के लिए आ रहे थे तब लक्ष्मी जी ने भी उनसे साथ चलने का आग्रह किया। तब विष्णु जी ने कहा कि यदि मैं जो बात कहूं तुम अगर वैसा ही मानो तो फिर चलो। तब लक्ष्मी जी उनकी बात मान गईं और भगवान विष्णु के साथ भूमंडल पर आ गईं। कुछ देर बाद एक जगह पर पहुंचकर भगवान विष्णु ने लक्ष्मी जी से कहा कि जब तक मैं न आऊं तुम यहां ठहरो। मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूं,तुम उधर मत आना। विष्णुजी के जाने पर लक्ष्मी के मन में कौतुहल जागा कि आखिर दक्षिण दिशा में ऐसा क्या रहस्य है जो मुझे मना किया गया है और भगवान स्वयं चले गए।

लक्ष्मी जी से रहा न गया और जैसे ही भगवान आगे बढ़े लक्ष्मी भी पीछे-पीछे चल पड़ीं। कुछ ही आगे जाने पर उन्हें सरसों का एक खेत दिखाई दिया जिसमें खूब फूल लगे थे। सरसों की शोभा देखकर वह मंत्रमुग्ध हो गईं और फूल तोड़कर अपना श्रृंगार करने के बाद आगे बढ़ीं। आगे जाने पर एक गन्ने के खेत से लक्ष्मी जी गन्ने तोड़कर रस चूसने लगीं।

उसी क्षण विष्णु जी आए और यह देख लक्ष्मी जी पर नाराज होकर उन्हें शाप दे दिया कि मैंने तुम्हें इधर आने को मना किया था,पर तुम न मानी और किसान की चोरी का अपराध कर बैठी। अब तुम इस अपराध के जुर्म में इस किसान की 12 वर्ष तक सेवा करो। ऐसा कहकर भगवान उन्हें छोड़कर क्षीरसागर चले गए। तब लक्ष्मी जी उस गरीब किसान के घर रहने लगीं।

एक दिन लक्ष्मीजी ने उस किसान की पत्नी से कहा कि तुम स्नान कर पहले मेरी बनाई गई इस देवी लक्ष्मी का पूजन करो,फिर रसोई बनाना,तब तुम जो मांगोगी मिलेगा। किसान की पत्नी ने ऐसा ही किया। पूजा के प्रभाव और लक्ष्मी की कृपा से किसान का घर दूसरे ही दिन से अन्न,धन,रत्न,स्वर्ण आदि से भर गया। लक्ष्मी ने किसान को धन-धान्य से पूर्ण कर दिया। किसान के 12 वर्ष बड़े आनंद से कट गए। फिर 12 वर्ष के बाद लक्ष्मीजी जाने के लिए तैयार हुईं।

विष्णुजी लक्ष्मीजी को लेने आए तो किसान ने उन्हें भेजने से इंकार कर दिया। तब भगवान ने किसान से कहा कि इन्हें कौन जाने देता है,यह तो चंचला हैं, कहीं नहीं ठहरतीं। इनको बड़े-बड़े नहीं रोक सके। इनको मेरा शाप था इसलिए 12 वर्ष से तुम्हारी सेवा कर रही थीं। तुम्हारी 12 वर्ष सेवा का समय पूरा हो चुका है। किसान हठपूर्वक बोला कि नहीं अब मैं लक्ष्मीजी को नहीं जाने दूंगा।

तब लक्ष्मीजी ने कहा कि हे किसान तुम मुझे रोकना चाहते हो तो जो मैं कहूं वैसा करो। कल तेरस है। तुम कल घर को लीप-पोतकर स्वच्छ करना। रात्रि में घी का दीपक जलाकर रखना और शायंकाल मेरा पूजन करना और एक तांबे के कलश में रुपए भरकर मेरे लिए रखना,मैं उस कलश में निवास करूंगी। किंतु पूजा के समय मैं तुम्हें दिखाई नहीं दूंगी। इस एक दिन की पूजा से वर्ष भर मैं तुम्हारे घर से नहीं जाऊंगी। यह कहकर वह दीपकों के प्रकाश के साथ दसों दिशाओं में फैल गईं। अगले दिन किसान ने लक्ष्मीजी के कथानुसार पूजन किया। उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया। इसी वजह से हर वर्ष तेरस के दिन लक्ष्मीजी की पूजा होने लगी।

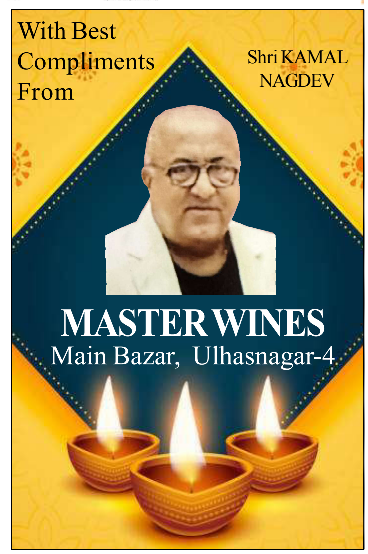

अँधेरे से रोशनी में जाने का प्रतीक
दीपावली पर्व

दीपावली का अर्थ है दीपों की पंक्ति। दीपावली शब्द 'दीप' एवं 'आवली' की संधिसे बना है। आवली अर्थात पंक्ति, इस प्रकार दीपावली शब्द का अर्थ है, दीपोंकी पंक्ति । भारतवर्षमें मनाए जानेवाले सभी त्यौहारों में दीपावलीका सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं।

तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात प्रकाश की ओर जाइए' यह उपनिषदों की आज्ञा है। इसे सिख, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग भी मनाते हैं। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचंद्र अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्यावासियों का ह्रदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से उल्लसित था। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीए जलाए । कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारतीय प्रति वर्ष यह प्रकाश-पर्व हर्ष व उल्लास से मनाते हैं। यह पर्व अधिकतर ग्रिगेरियन कैलन्डर के अनुसार अक्तूबर या नवंबर महीने में पड़ता है। दीपावली दीपों का त्योहार है। इसे दीवाली या दीपावली भी कहते हैं। दीवाली अँधेरे से रोशनी में जाने का प्रतीक है। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है झूठ का नाश होता है। दीवाली यही चरितार्थ करती है- असतो माऽ सद्गमय , तमसो माऽ ज्योतिर्गमय। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है। कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती है। लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य आरंभ कर देते हैं। घरों में मरम्मत, रंग-रोगन,सफ़ेदी आदि का कार्य होने लगता हैं। लोग दुकानों को भी साफ़ सुथरा का सजाते हैं। बाज़ारों में गलियों को भी सुनहरी झंडियों से सजाया जाता है। दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाज़ार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे नज़र आते हैं। दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग-अलग कारण या कहानियाँ हैं। राम भक्तों के अनुसार दीवाली वाले दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे थे। उनके लौटने कि खुशी मे आज भी लोग यह पर्व मनाते है। कृष्ण भक्तिधारा के लोगों का मत है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीए जलाए। एक पौराणिक कथा के अनुसार विष्णु ने नरसिंह रुप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया था तथा इसी दिन समुद्रमंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए। जैन मतावलंबियों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली को ही है। सिक्खों के लिए भी दीवाली महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ था। और इसके अलावा 1619 में दीवाली के दिन सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था। नेपालियों के लिए यह त्योहार इसलिए महान है क्योंकि इस दिन से नेपाल संवत में नया वर्ष शुरू होता है ।पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दोनों दीपावली के दिन ही हुआ। इन्होंने दीपावली के दिन गंगातट पर स्नान करते समय ओम कहते हुए समाधि ले ली। महर्षि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया। इन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। दीन-ए-इलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा आकाशदीप दीपावली के दिन लटकाया जाता था। बादशाह जहाँगीर भी दीपावली धूमधाम से मनाते थे। मुगल वंश के अंतिम सम्राट बहादुर शाह जफर दीपावली को त्योहार के रूप में मनाते थे और इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में वे भाग लेते थे। शाह आलम द्वितीय के समय में समूचे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था एवं लालकिले में आयोजित कार्यक्रमों में हिन्दू-मुसलमान दोनों भाग लेते थे।

पर्वों का समूह दीपावली

दीपावली के दिन भारत में विभिन्न स्थानों पर मेले लगते हैं। दीपावली एक दिन का पर्व नहीं अपितु पर्वों का समूह है। दशहरे के पश्चात ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती है। लोग नए-नए वस्त्र सिलवाते हैं। दीपावली से दो दिन पूर्व धनतेरस का त्योहार आता है। इस दिन बाज़ारों में चारों तरफ़ जनसमूह उमड़ पड़ता है। बरतनों की दुकानों पर विशेष साज-सज्जा व भीड़ दिखाई देती है। धनतेरस के दिन बरतन खरीदना शुभ माना जाता है अतैव प्रत्येक परिवार अपनी-अपनी आवश्यकता अनुसार कुछ न कुछ खरीदारी करता है। इस दिन तुलसी या घर के द्वार पर एक दीपक जलाया जाता है। इससे अगले दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दीपावली होती है। इस दिन यम पूजा हेतु दीपक जलाए जाते हैं। अगले दिन दीपावली आती है। इस दिन घरों में सुबह से ही तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। बाज़ारों में खील-बताशे , मिठाइयाँ ,खांड़ के खिलौने, लक्ष्मी-गणेश आदि की मूर्तियाँ बिकने लगती हैं। स्थान-स्थान पर आतिशबाजी और पटाखों की दूकानें सजी होती हैं। सुबह से ही लोग रिश्तेदारों, मित्रों, सगे-संबंधियों के घर मिठाइयाँ व उपहार बाँटने लगते हैं। दीपावली की शाम लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा की जाती है। पूजा के बाद लोग अपने-अपने घरों के बाहर दीपक व मोमबत्तियाँ जलाकर रखते हैं। चारों ओर चमकते दीपक अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं। रंग-बिरंगे बिजली के बल्बों से बाज़ार व गलियाँ जगमगा उठते हैं। बच्चे तरह-तरह के पटाखों व आतिशबाज़ियों का आनंद लेते हैं। रंग-बिरंगी फुलझड़ियाँ, आतिशबाज़ियाँ व अनारों के जलने का आनंद प्रत्येक आयु के लोग लेते हैं। देर रात तक कार्तिक की अँधेरी रात पूर्णिमा से भी से भी अधिक प्रकाशयुक्त दिखाई पड़ती है। दीपावली से अगले दिन गोवर्धन पर्वत अपनी अँगुली पर उठाकर इंद्र के कोप से डूबते ब्रजवासियों को बनाया था। इसी दिन लोग अपने गाय-बैलों को सजाते हैं तथा गोबर का पर्वत बनाकर पूजा करते हैं। अगले दिन भाई दूज का पर्व होता है।

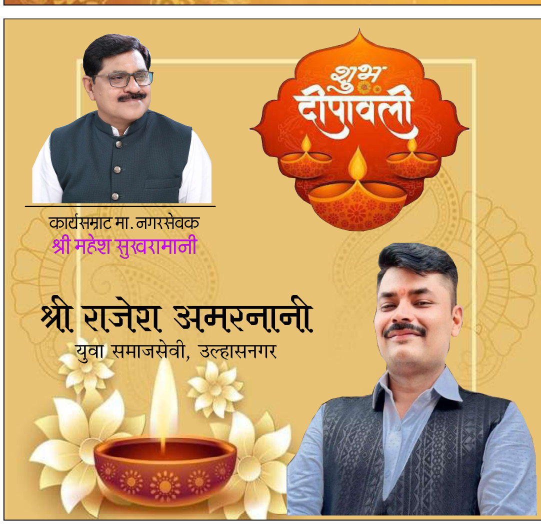

घर की साज-सज्जा एवं रंग-रोगन के लिए चुनें समृद्धिदायक रंग

दीपावली के पहले घरों की रंगाई-पुताई करवा रहे हैं, तो यह टिप्स आपको जरूर जानना चाहिए। घर की साज-सज्जा एवं रंग-रोगन के लिए दिशा के अनुसार चुनें इन 5 समृद्धिदायक रंगों को, और पाएं वर्ष भर खुशहाली व सुख-समृद्धि। जानें कैसे करें रंगों का चुनाव.

- हिन्दू धर्म के सबसे बड़े त्योहार दीपावली के लिए कई दिनों से घर में साफ-सफाई और रंग-रोगन का दौर शुरू हो जाता है। घर में सुख शांति और प्रसन्नता का वातावरण बना रहे इसलिए कई लोग घर की साज-सज्जा व रंगाई के लिए वास्तु और फेंगशुई के टिप्स भी आजमाते हैं। आप भी सौभाग्य के लिए घर रंगवाते समय ध्यान रखें इन 5 बातों का
- घर का बैठक कक्ष सबसे अहम होता है, इसलिए यहां की दीवारों पर विशेष तौर पर ध्यान देने की जरूरत होती है। यहां पर भूरा, गुलाबी, सफेद या क्रीम कलर सबसे अच्छा माना जाता है। यहां पर इन रंगों के परदे या तकिए कवर का इस्तेमाल भी शुभ फल देता है।
- भोजन कक्ष को रंगवाते समय आसमानी, हल्का हरा व गुलाबी रंग करवा सकते हैं। इससे हमेशा उर्जा व ताजगी का संचार होता है, और सकारात्मकता बनी रहती है।
- रसोई घर में सफेद रंग हमेशा अच्छा माना जाता है। हांलांकि यह गंदा भी बहुत जल्दी होता है, लेकिन अगर आप नियमित तौर पर सफाई बनाएं रखें तो यह बहुत ही सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है।
- शयन कक्ष भी काफी महत्वपूर्ण होता है, यहां पर भी आप हल्का हरा, आसमानी, गुलाबी जैसे रंगों को इस्तेमाल कर सकते हैं, जिन्हें देखकर मन हमेशा प्रसन्न रहे। इससे आपके रिश्तों में भी मधुरता आती है।
- बाथरूम या शौचालय के लिए हल्का गुलाबी या फिर सफेद रंग ही सबसे बेहतर होते हैं। खास तौर से बाथरूम में गुलाबी रंग का प्रयोग ताजगी बनाए रखता है और आप आंतरिक खुशी महसूस करते हैं।

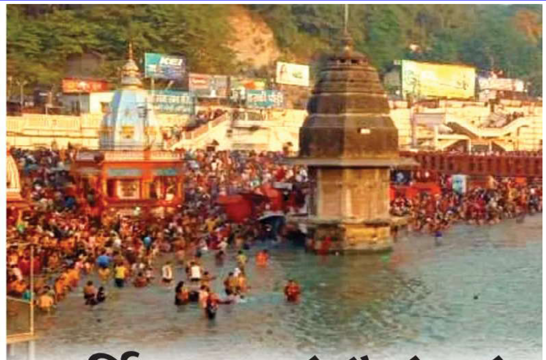

कार्तिक मास में कैसे करें पवित्र नदी में स्नान

कार्तिक माह का प्रारंभ हो गया है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार कार्तिक माह में व्रत, स्नान और दान का बहुत ही ज्यादा महत्व है। इससे पाप का नाश होकर सुख, शांति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस माह में पवित्र नदी या जलाशयों में स्नान करने के महत्व दोगुना बढ़ जाता है। आओ जानते हैं कि पवित्र नदी में किसी तरह करें स्नान की मिले दोगुना फल।

रोगापहं पातकनाशकृत्परं सद्‌बुद्धिदं
पुत्रधनादिसाधकम।
मुक्तेर्निदांन नहि कार्तिकव्रताद्
विष्णुप्रियादन्यदिहास्ति भूतले।।
-(स्कंदपुराण.वै.का.मा.5/34).

अर्थात- कार्तिक मास आरोग्य प्रदान करने वाला, रोगविनाशक, सद्‌बुद्धि प्रदान करने वाला तथा मां लक्ष्मी की साधना के लिए सर्वोत्तम है।

- कार्तिक स्नान के लिए तीर्थराज प्रयाग, अयोध्या, कुरुक्षेत्र और काशी को सर्व श्रेष्ठ स्थान माना गया है। प्राचीन काल में कुरक्षेत्र में सरस्वती का बहाव धा।
- इनके साथ ही सभी पवित्र नदियों और तीर्थस्थलों पर भी स्नान शुभ माना है। अगर आप इन स्थानों पर नहीं जा सकते, तो इन स्थान और यहां बहने वाली नदियों का स्मरण करने से भी लाभ होता है। इसके लिए एक श्लोक भी प्रचलित है-

'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन संनिधिं कुरु।।
स्नान करते समय-
आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च।
पापं नाशाय मे देव वामनः कर्मभिः कृतम।
यह बोल कर जल की ओर
दुःखदरिद्रयनाषाय श्रीविश्णोस्तोशणाय च।
प्रातःस्नान करोम्यद्य माघे पापविनाषनम।।
कहकर ईश्वर की स्तुति करनी चाहिए।
स्नान जब समाप्त हो जाए तो इस मंत्र का उत्वारण करें.
सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम।
त्वत्तेजसा परिभ्रश्टं पापं यातु सहस्त्रधा।।

कार्तिक माह का महत्व

- इस मास में श्री हरि जल में ही निवास करते हैं।
- कार्तिक माह में गंगा स्नान, दान, दीप दान, हवन, यज्ञ आदि करने से सांसारिक पाप का नाश होता है और व्यक्ति को मृत्यु के बाद स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
- इस दिन व्रत का भी बहुत ही महत्व है। इस दिन उपवास करके भगवान का स्मरण, चिंतन करने से अग्निष्टोम यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है तथा सूर्यलोक की प्राप्ति होती है।
- कार्तिकी पूर्णिमा से प्रारम्भ करके प्रत्येक पूर्णिमा को रात्रि में व्रत और जागरण करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।

दीपावली: मुख्य द्वार पर इन खूबसूरत रंगोली डिजाइन से करें मां लक्ष्मी का स्वागत

सोमवार रंगोली

इस रंगोली को बनाने से सभी बाधाएं दूर होती हैं और प्रगति होती है। चंद्रमा की पूजा करने की योग्यता आती है। इस रंगोली के मध्य में लिखा गया '' क्लीं'' ये बीजमंत्र कहलाता है इसका भगवान श्री कृष्ण से रिश्ता होता है। यह बीजमंत्र ज्ञान का कारक है। यह लक्ष्मी बीजमंत्र भी है। लक्ष्मी की कृपा के कारण, इस रंगोली का प्रयोग धन और समृद्धि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। जब यह रंगोली बनाई जाती है, तो यह एक प्रकार की ऊर्जा पैदा करती है।

मंगलवार रंगोली

इस रंगोली से धन तथा शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। मंगल की पूजा लाभदायक होती है। इसमें बना बीजमंत्र सूर्य की तरह होता है। इस बीजमंत्र में सूर्य की शक्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने की शक्ति होती है।

बुधवार रंगोली

यह रंगोली सभी प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान देती है। पत्नियां घर में सम्मान पाती है, घर में सुख-शांति बनी रहती हैं। धन हानि होने से बचाव होता है। और बुध ग्रह की पूजा से लाभ होता है।

गुरुवार रंगोली

इस रंगोली को बनाने से धन लाभ होता है। सारी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होती है। गुरु की पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

शुक्रवार रंगोली

इस रंगोली को बनाने से बच्चों की शादी में होने वाली अड़चन दूर होती है। बच्चों की सही जगह शादी हो जाती है। जोड़ीदार अच्छा मिलता है। शुक्र ग्रह की पूजा करने का लाभ मिलता है। यह दिन देवी का भी होने से आदि शक्ति का आशीर्वाद हम पर रहता है।

शनिवार रंगोली

इस रंगोली को बनाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। भूत, प्रेत, पिशाच बाधा नहीं होती हैं। शनि ग्रह की पूजा करने से लाभ होता है। शनि न्याय का ग्रह माना जाता है, इस ग्रह से कष्ट भी मिलते है, पर अपने सारे दुःख कष्ट को मिटाने की शक्ति इस रंगोली में है।

रविवार रंगोली

इस रंगोली को बनाने से सारे मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं। सूर्य की पूजा का लाभ मिलता है। आप प्रत्येक दिन सूर्य भगवान के दर्शन करते हैं। इन भगवान में एक अनिर्दिष्ट आत्म-शक्ति छिपी हुई है, जिसे हम देख नहीं सकते, लेकिन महसूस कर सकते हैं। सूर्य भगवान की पूजा करने से हमें एक आत्मीय शांति मिलती है। यह सूर्य रंगोली देवता को प्रसन्न करती है।

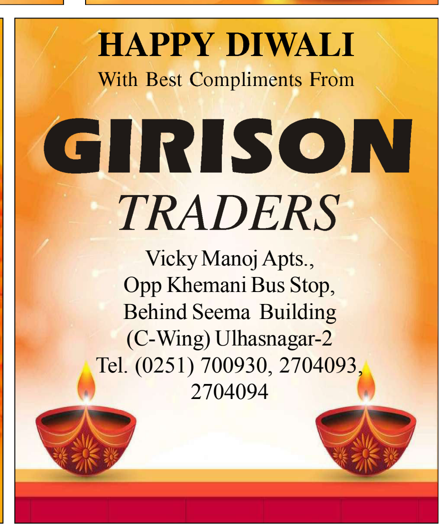

Happy Diwali

Hotel
Praveen International
Wishing You a Very Happy Diwali & Prosperous New Year

-☆- Our Speciality -☆-
- ☆ A .C. HALL (CAPACITY 50 to 400 PERSONS)
- ☆ OPEN TARRACE (100 PERSON TO 400 PERSONS)
- ☆ DELUXE, ☆ SUPER DELUXE & ☆ SUIT ROOMS
- ☆ MULTICUSSION FAMILY RESTAURANT WITH BAR ATACHED
- ☆ SPACIOUS PARKING
- ☆ GENERATOR BACK UP
- ☆ NO HALL RENT
- ☆ ONLY FOOD CHARGE INCLUDING HALL

E-mail : praveeninternational8@gmail.com

Hotel
Praveen International
Near Vithalwadi Railway Station, Opp. Udyog Vihar Ind.Estate, Ulhasnagar-421003.
Tel.: (0251) 2707025 / 26 / 2708024

शुभ दीपावली

Cardiology Care
Heart Helpline No.
9322390330

Surekha & Sai
CRITICARE HOSPITAL
- Medical emergency -
can come anytime and during emergency time any medical help on phone can save life.

Criticare Hospital Ulhasnagar
always thinks about people and saving life .
We hope this initiative will help to save life

24 Hrs. Emergency- If You Need Ambulance Call : 7798783437

SUREKHA CRITICARE HOSPITAL Next to Indian Bank, Near Jawahar Hotel, Hospital Road, Ulhasnagar-421003. Ph.No.8237898959, 0251-2569191	**SAI CRITICARE HOSPITAL** Opp. Domino's & Roshan Apt., Next to Axis Bank, Venus Chowk, Ulhasnagar-421004. Ph.No.0251-2530040/50, 8686266112
SEVEN PALM HOSPITAL Mohan Palm, Katrap, Badlapur (E)-421503. Ph.No. 7066737444, 7066735444	**SHRIYAN HOSPITAL** Multispeciality & ICCU, Ulhasnagar-421001 Ph No. 9922400084

// जय माता दी //
दीपावली के महापर्व की आप सभी को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...

श्री जॉनी मंगलानी
श्री शक्ति राठौड़

S.V.S.
CONSTRUCTIONS
BUILDERS & DEVELOPERS

स्वर्गीय भाऊ ठाकुरदास बहरानी

दीपावली के महापर्व की आप सभी को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...

श्री प्रदीप (पप्पू) बहरानी

❖ युवा व्यापारी नेता, उल्हासनगर
❖ अध्यक्ष- रोटरी क्लब ऑफ सिंधनगर (उल्हासनगर)

स्व.श्री प्रकाश आहुजा

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री महेश प्रकाश आहुजा
उद्योगपति, उल्हासनगर

श्रीमती सीमा महेश आहुजा
कांग्रेस नेता

शुभ दीपावली
Happy Diwali

Sunil Aswani
व्यापारी नेता, उल्हासनगर
भारतीय जनता पार्टी
9890681730, 9323849654

शुभ दीपावली

श्री अनिल बालानी
राम जयरामदास

मोहन डेकोरेटर्स उल्हासनगर
मो. 9326003892, 9821127646

दीपावली के महापर्व की आप सभी को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...

मन्शा देवी किराना स्टोर
मच्छी मार्केट, ओटी सेक्शन,
उल्हासनगर-2.

Jai Mata Di
Property Consulant

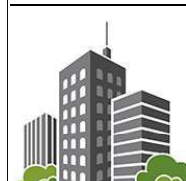

Property Consulant
DEALS IN:-
ALL KINDS OF PROPERTIES

Shop No. G-3, Ganga Sagar Apt., Near Gandhi Road Bus Stop, Ulhasnagar - 421005.

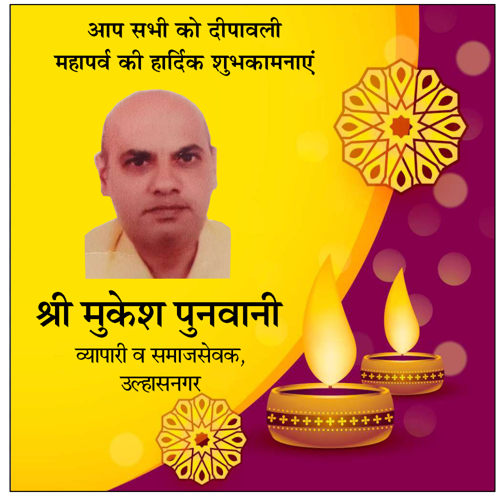

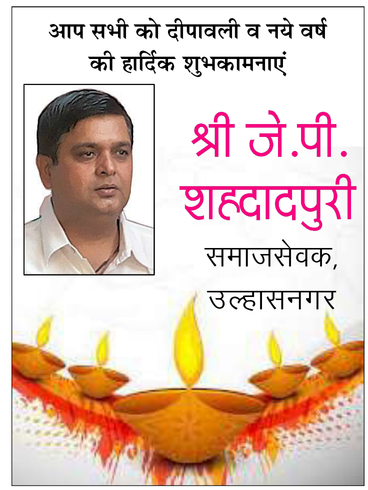

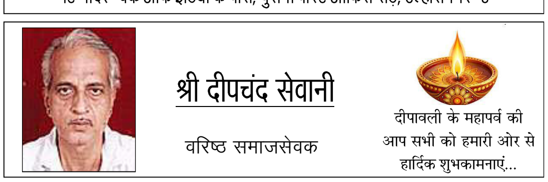

प्रकाशक, मुद्रक, मालिक संपादक श्री टीकम (टोनी) जे. लालवानी ने जय श्रीकृष्णा प्रिंटिंग प्रेस से छपवाकर मातोश्री मोहिनी बाई पैलेस, बैरक नंबर 427, रूम नंबर 15, निरंकारी हॉल के पीछे, उल्हासनगर-421001, जिला ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया।

RNI No. 68359/93,

(सभी प्रसंगों का न्याय क्षेत्र उल्हासनगर रहेगा)

टेलीफोन नंबर 2703289, फैक्स 2700215.

दैनिक 'धनुषधारी' में छपने वाली विज्ञापनों की सत्यता की जिम्मेदारी हमारी अखबार प्रबंधन की नहीं है। विज्ञापन में छपने वाले उत्पाद खरीदने, बेचने या किसी भी व्यवसाय या नौकरी लेने-या देने की जिम्मेदारी पाठक की खुद की रहेगी। -प्रबंधन।

नरकासुर की कथा

इसी तरह, दिवाली जो 'प्रकाश का त्यौहार' है - उसके पीछे भी कुछ कहानियाँ हैं। इनमें से एक है कि इस दिन श्रीराम 14 साल के वनवास के बाद वापिस घर लौटे थे।

एक अन्य कहानी के अनुसार एक दुष्ट व्यक्ति जो सबको परेशान करता था – उसकी हार हो गयी और फिर उससे पूछा गया कि उसकी आखिरी इच्छा क्या है? तब उसने बोला कि जिस दिन पृथ्वी पर उसका आखिरी दिन हो, उस दिन पृथ्वी का प्रत्येक व्यक्ति दिया जलाए और अज्ञान रुपी अन्धकार को दूर करके उसकी मृत्यु का उत्सव मनाये। देखिये, यह कितनी अच्छी इच्छा है! वह भी एक ऐसे इंसान की जो हिटलर की तरह था, लोगों को कष्ट देता था।

श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा ने उसे युद्ध में पराजित किया था। वह इतना शक्तिशाली था कि कोई भी पुरुष उसे परास्त नहीं कर पाया था लेकिन जब उसके सामने एक महिला आयी, तो उसने ज्यादा ध्यान नहीं दिया। उसने सोचा, 'यह महिला क्या कर सकती है?' मगर वास्तव में महिला ने ही उसे परास्त कर दिया। कृष्ण की पहली पत्नी ने उसे हराया और उसके पीछे कृष्ण ही थे। उसका नाम 'नरकासुर' इसलिए पड़ा था क्योंकि वह जहाँ भी जाता था, वहाँ लोगों को कष्ट देकर उस जगह को नरक बना देता था। इसलिए मरते समय जब उससे पूछा गया, कि अब तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है? तब उसने कहा, 'मेरी आखिरी इच्छा है कि मेरी मृत्यु सबके जीवन में प्रकाश लाये। 'तो

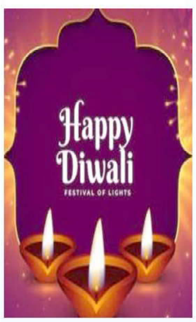

फिर सभी लोगों ने दिए जलाए, जितने हो सके उतने अधिक दिए जलाए, जीवन का उत्सव मनाया। सभी कड़वाहट भूलकर जीवन को उल्लासित होकर मनाया और इसी तरह दिवाली का जन्म हुआ। इसी तरह बहुत सी कहानियाँ हैं।

14 वर्ष के वनवास के पश्चात भगवान राम के अयोध्या लौटने की खुशी में मनाई जाती है दिवाली

माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात लौटे थे। अयोध्यावासियों का हृदय अपने परम प्रिय राजा के आगमन से हर्षित हो उठा था। श्री राम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तब से आज तक भारत के लोग प्रति वर्ष यह प्रकाश–पर्व हर्ष और उल्लास से मनाते हैं। भारतीयों का विश्वास है कि सत्य की सदा जीत होती है और असत्य की हार होती है।

कार्तिक अमावस्या के दिन समुद्र मंथन से हुआ था माँ लक्ष्मी का अवतरण, इसलिए दिवाली पर करते हैं माँ लक्ष्मी का पूजन

हर बार दीपावली का त्यौहार हिन्दी कैलंडर के अनुसार कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन समुद्र मंथन के दौरान माँ लक्ष्मी का अवतरण हुआ था। माता लक्ष्मी को धन और समृद्धि की देवी माना जाता है। इसलिए हर घर में दीप जलाने के साथ–साथ हम माता लक्ष्मी जी की पूजा भी करते हैं।

दिवाली क्यों मनाई जाती है

दिवाली, जिसे संपूर्ण विश्व में प्रकाश के त्यौहार के रूप में जाना जाता है, बुराई पर अच्छाई की, अंधकार पर प्रकाश की तथा अज्ञान पर ज्ञान की विजय का त्यौहार है। आज के दिन घरों में रोशनी न केवल सजावट के लिए होती है, किंतु यह जीवन कथा सत्य को भी अभिव्यक्त करती है। प्रकाश अंधकार को मिटा देता है, और जब ज्ञान के प्रकाश से आपके अंदर का अंधकार मिट जाता है, आप में अच्छाई बुराई पर विजय प्राप्त कर लेती हैंद्य

वैसे तो इस उत्सव से संबंधित बहुत सी गाथाएं हैं–

दिवाली मुख्यत: प्रत्येक हृदय में ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित करने के लिए मनाई जाती है, प्रत्येक घर में जीवन, प्रत्येक मुख पर मुस्कान लाने के लिए मनाई जाती है।

दिवाली शब्द दीपावली का लघु रूप है, जिस का शाब्दिक अर्थ है प्रकाश की पंक्ति। जीवन के बहुत से पहलुओं तथा स्तर होते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप उन सभी पर प्रकाश डालें क्योंकि यदि आपके जीवन का एक भी पहलू अंधकार मय होगा तो, आपका जीवन कभी भी पूर्णता अभिव्यक्त नहीं हो सकेगा।

इसलिए दिवाली में दीपों की पंक्तियां प्रज्वलित की जाती है कि आपको ध्यान रहे कि आपके जीवन के प्रत्येक पहलू को आपके ध्यान की तथा ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता है।

आपके द्वारा प्रज्वलित प्रत्येक दीप, सदगुण का प्रतीक है।प्रत्येक मनुष्य में सद्गुण होते हैं। कुछ में धैर्य होता है, कुछ में प्रेम, शक्ति, उदारता- अन्य में लोगों को संगठित करने की क्षमता होती है। आप में स्थित प्रकट मूल्य दिए के समान है। जैसे ही वह प्रवलित हो जाएं, जागृत हो जाएं, दीवाली है।

दीपावली पर्व के गहरे अर्थ को जानें

केवल एक ही दीप का प्रज्वलित कर संतुष्ट न हो, हज़ार दीप प्रज्वलित करें। यदि आप में सेवा का भाव है, केवल उससे ही संतुष्ट न हो, अपने में ज्ञान का दीप जलाएं, ज्ञान अर्जित करें। अपने अस्तित्व के सभी पहलुओं को प्रकाशित करें।

दिवाली का एक और गुण रहस्य पटाखों के फूटने में है। जीवन में आप कई बार पटाखों के समान होते हैं, अपनी दबी हुई भावनाओं, हताशा तथा क्रोध के साथ फूट पढने के लिए तैयार। जब आप अपने राग–द्वेष, घृणा को दबाये रखते हैं फूट पढ़ने की सीमा पर पहुँच जाता है। पटाखे फोड़ने की क्रिया का प्रयोग हमारे पूर्वजों द्वारा, लोगों की

भावनाओं की अभिव्यक्ति देने के लिए, एक मनोवैज्ञानिक अभ्यास के रूप में किया गया।

जब आप बाहर विस्फोट देखते हैं तो आप अपने अंदर भी वैसी संवेदनाओं का अनुभव करते हैं। विस्फोट के साथ बहुत सा प्रकाश निकलता है। जब आप अपनी दबी हुई भावनाओं से मुक्त होते हैं तब आप खाली हो जाते हैं तथा अपने ज्ञान के प्रकाश का उदय होता है।

ज्ञान की सभी जगह आवश्यकता है। यदि परिवार का एक भी व्यक्ति अंधकार में है, आप खुश नहीं रह सकते। अत: आप को अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य में ज्ञान का प्रकाश स्थापित करना होगा। इससे समाज के प्रत्येक सदस्य तक ले जाएं, पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाये।

जब सच्चा ज्ञान उदित होता है, उत्सव होता है। अधिकतर उत्सव में हम अपनी सजगता अथवा एकाग्रता खो देते हैं।उत्सव में सजगता बनाए रखने के लिए, हमारे ऋषि यों ने प्रत्येक उत्सव को पवित्रता तथा पूजा विधियों से जोड़ दिया है। इसलिए दिवाली भी पूजा का समय है। दिवाली का आध्यात्मिक पहलू, उत्सव में गांभीर्य लाता है। प्रत्येक उत्सव में आध्यात्म होना चाहिए।

दिवाली का रहस्य

संसार भर में लोग इस समय प्रकाश का पर्व दिवाली मनाने की तैयारी कर रहे हैं। पूर्व के सबसे बड़े त्यौहारों में से एक दिवाली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई के, अंधकार पर प्रकाश के और अज्ञानता पर ज्ञान के विजय का सूचक है।

दीपक का महत्व

तेल के दीपक को प्रवलित करने के लिए बत्ती को तेल में डुबाना पड़ता है परन्तु यदि बत्ती पूरी तरह से तेल में डूबी रहे तो यह जल कर प्रकाश नहीं दे पाएगी, इसलिए उसे थोड़ा सा बाहर निकाल के रखते हैं। हमारा जीवन भी दीपक की इसी बत्ती के सामान है, हमें भी इस संसार में रहना है फिर भी इससे अछूता रहना पड़ेगा। यदि हम संसार की भौतिकता में ही डूबे रहेंगे, तो हम अपने जीवन में सच्चा आनंद और ज्ञान नहीं ला पाएँगे। संसार में रहते हुए भी, इसके सांसारिक पक्षों में न डूबने से हम, आनंद एवं ज्ञान के द्योतक बन सकते हैं।

जीवन में ज्ञान के प्रकाश का स्मरण कराने के लिए ही दिवाली मनाई जाती है। दिवाली केवल घरों को सजाने के लिए नहीं, बल्कि जीवन के इस गूढ़ रहस्य को उजागर/संप्रेषित करने के लिए भी मनाई जाती है। हर दिल में ज्ञान और प्रेम का दीपक जलाएँ और हर एक के चेहरे पर मुस्कान की आभा लाएँ।

प्रकाश की पंक्तियाँ

दिवाली को दीपावली भी कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'प्रकाश की पंक्तियाँ'। जीवन में अनेक पक्ष एवं पहलू आते हैं और जीवन को पूरी तरह से अभिव्यक्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उन सब पर प्रकाश डालें। प्रकाश कि ये पंक्तियाँ हमें याद दिलाती हैं कि जीवन के हर पहलू पर ध्यान देने और ज्ञान का प्रकाश डालने की आवश्यकता है।

प्रत्येक मनुष्य में कुछ अच्छे गुण होते हैं और हमारे द्वारा प्रवलित हर दीपक, इसी बात का प्रतीक है। कुछ लोगों में सहिष्णुता होती है, कुछ में प्रेम, शक्ति, उदारता आदि गुण होते हैं जबकि कुछ लोगों में, लोगों को जोड़ के रखने का गुण होता है। हमारे भीतर के यह छिपे हुए गुण, एक दीपक के समान है। केवल एक ही दीपक प्रवलित कर के संतुष्ट न हों जाएँ ‒ हजारों दीपक जलाएँ! अज्ञानता के अन्धकार को दूर करने के लिए हमें अनेक दीपक जलाने की आवश्यकता है। ज्ञान के दीपक को जला कर एवं ज्ञान अर्जित कर के हम अपने अस्तित्व के सभी पहलुओं को जागृत कर देते हैं। जब ये प्रकाशित एवं जागृत हो जाते हैं, तब ही दिवाली है।

दिवाली – पटाखे, मिठाई एवं उपहार

दिवाली में पटाखे जलाने का भी एक गूढ़ अर्थ है। जीवन में अक्सर अनेक बार हम भावनाओं, निराशा एवं क्रोध से भरे पड़े होते हैं, पटाखों की तरह फटने को तैयार। जब हम अपनी भावनाओं, लालसाओं/ऐषणाओं, विद्वेष को दबाते रहते हैं तब यह एक विस्फोट बिंदु तक पहुच जाते हैं। पटाखों को जलाना /विस्फोट करना, दमित भावनाओं को मुक्त करने के लिए हमारे पूर्वजों द्वारा बनाया गया एक मनोवैज्ञानिक अभ्यास है। जब हम बाहरी दुनिया में एक विस्फोट देखते हैं तो अपने भीतर भी एक इसी प्रकार की, समान संवेदना महसूस करते हैं। विस्फोट के साथ ही बहुत सा प्रकाश फैल जाता है। जब हम अपनी इन भावनाओं से मुक्त होते हैं तो गहन शांति का उदय होता है।

दिवाली के दौरान एक और परंपरा है, मिठाइयों और उपहारों का आदान प्रदान। एक दूसरे को मीठा और उपहार देने का अर्थ है, भूतकाल की सभी खटास को मिटा कर आने वाले समय के लिए मित्रता को नवजीवन प्रदान करना।

ज्ञान और प्रकाश

कोई भी उत्सव सेवा भावना के बिना अधूरा है। ईश्वर से हमें जो भी मिला है, वह हमें दूसरों के साथ भी बाँटना चाहिए क्योंकि जो बाँटना है, वह हमें भी तो कहीं से मिला ही है और यही सच्चा उत्सव है। आनंद एवं ज्ञान को फैलाना ही चाहिए और ये तभी हो सकता है, जब लोग ज्ञान में साथ आएँ।

दिवाली का अर्थ है वर्तमान क्षण में रहना, अत: भूतकाल के पश्चाताप और भविष्य की चिंताओं को छोड़ कर इस वर्तमान क्षण में रहें। यही समय है कि हम साल भर की आपसी कलह और नकारात्मकताओं को भूल जाएँ। यही समय है कि जो ज्ञान हमने प्राप्त किया है उस पर प्रकाश डाला जाए और एक नई शुरुआत की जाए। जब सच्चे ज्ञान का उदय होता है, तो उत्सव को और भी बल मिलता है।

अध्यात्मिक ज्ञान और दिवाली

आत्मा का स्वाभाव है उत्सव। प्राचीन काल में साधु–संत हर उत्सव में पवित्रता का समावेश कर देते थे ताकि विभिन्न क्रिया–कलापों की भागदौड़ में हम अपनी एकाग्रता न खो दें। रीति रिवाज एवं धार्मिक अनुष्ठान ईश्वर के प्रति कृतज्ञता या आभार का प्रतीक ही तो हैं। यह हमारे उत्सव में गहराई लाते हैं। दिवाली में परंपरा है कि हमने जितनी भी धन संपदा कमाई है उसे अपने सामने रख कर प्रचुरता (तृप्ति) का अनुभव करें। जब हम अभाव का अनुभव करते हैं तो अभाव बढ़ता है, परन्तु जब हम अपना ध्यान प्रचुरता पर रखते हैं तो प्रचुरता बढ़ती है। चाणक्य ने अर्थशास्त्र में कहा है, धर्मस्य मूलं अर्थ: अर्थात सम्पन्नता धर्म का आधार होती है।

लैपटॉप और टीवी स्क्रीन साफ करते समय न करें यह गलती, लग सकता है हजारों का चूना

लैपटॉप हो या टीवी या फिर अन्य किसी भी तरह का स्क्रीन इसको साफ करने के लिए हमेशा माइक्रोफाइबर कपड़े का उपयोग करना चाहिए। वहीं, स्क्रीन पर छिड़कने के लिए विशेष तरह के लिक्विड क्लीनर का उपयोग करना चाहिए। हालांकि, किसी भी लिक्विड को सीधे स्क्रीन पर नहीं छिड़कना चाहिए।

ऑफिस के वर्क से लेकर पर्सनल काम तक लैपटॉप आज के समय में जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। बच्चों से लेकर बड़ों तक हर उम्र के लोग लैपटॉप का उपयोग करते हैं। बच्चे लैपटॉप पर ऑनलाइन क्लास करते हैं। वहीं, बड़े इसका उपयोग कई तरह से करते हैं। लैपटॉप का उपयोग ऑफिस में काम करने के अलावा मूवी देखने के लिए भी किया जाता है।

टीवी स्क्रीन की सफाई समय इन बातों का रखें ख्याल

वहीं, लैपटॉप के लगातार उपयोग से यह कई बार काफी गंदा हो जाता है, जिसको साफ करना काफी जरूरी हो जाता है। हालांकि, कई लोग लैपटॉप और टीवी स्क्रीन की सफाई करते समय कुछ गलतियां करते हैं, जिससे उनका डिवाइस खराब हो जाता है, जिसके बाद उन्हें भारी भरकम नुकसान हो जाता है। इस लेख में हम आपको लैपटॉप और टीवी स्क्रीन को साफ करने के टिप्स के बारे में बताए गए हैं।

लैपटॉप और टीवी स्क्रीन को साफ करते समय लोग करते हैं ये गलती

लैपटॉप और टीवी स्क्रीन को साफ करते समय लोग कई तरह की गलतियां करते हैं। इससे डिस्पले खराब होने का खतरा बना रहता है। कई लोग स्क्रीन साफ करने के लिए रफ कपड़े, तौलिये या पेपर नैपकिन का उपयोग करते हैं। इससे स्क्रीन पर स्क्रैच आ सकता है। वहीं, कई लोग ऐसे भी होते हैं, जो स्क्रीन पर सीधे पानी या फिर किसी तरह का क्लीनर का उपयोग कर देते हैं। स्क्रीन पर पानी या क्लीनर का छिड़काव सीधे नहीं करना चाहिए। इससे स्क्रीन के अंदर नमी जा सकती है, जिसके कारण डिवाइस खराब होने का खतरा हो सकता है।

लैपटॉप डिस्प्ले को कैसे करें साफ?

लैपटॉप हो या टीवी या फिर अन्य किसी भी तरह का स्क्रीन इसको साफ करने के लिए हमेशा माइक्रोफाइबर कपड़े का उपयोग करना चाहिए। वहीं, स्क्रीन पर छिड़कने के लिए विशेष तरह के लिक्विड क्लीनर का उपयोग करना चाहिए। हालांकि, किसी भी लिक्विड को सीधे स्क्रीन पर नहीं छिड़कना चाहिए। अगर आप लिक्विड का उपयोग करना चाहते हैं तो इसको पहले माइक्रोफाइबर कपड़े पर छिड़के फिर आप डिस्पले पर लगाएं।

उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे द्वारा धर्मवीर आनंद दिघे नाट्यमंदिर का भव्य लोकार्पण

अंबरनाथ (नि.स)। अंबरनाथ शहर में रविवार 19 अक्टूबर को धर्मवीर आनंद दिघे नाट्यमंदिर का भव्य उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने नाट्यगृह का लोकार्पण किया। कल्याण लोकसभा क्षेत्र के सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे के पहल पर यह नाट्यगृह तैयार हुआ है।

उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि जब किसी शहर में नाट्यगृह खड़ा होता है, तो वहां की सांस्कृतिक पहचान बनती है। उन्होंने दर्शकों से अपील की कि इस नाट्यमंदिर की पवित्रता को बनाए रखें। इस अवसर पर नाट्यगृह के रंगमंच का नाम ज्येष्ठ रंगकर्मी स्व. बाळ कोल्हटकर के नाम पर रखा गया और प्रांगण में लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे की प्रतिमा लगाने की घोषणा की गई।

कल्याण लोकसभा क्षेत्र के सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे ने बताया कि शहर में पहले ही सड़कें, ग्रंथालय, उद्यान और अन्य पायाभूत सुविधाएँ विकसित की जा चुकी हैं। अब इस नाट्यगृह के माध्यम से सांस्कृतिक क्षेत्र में भी नई पहल हुई है। अंबरनाथ और आसपास के लोग अब कल्याण या डोंबिवली न जाकर यहां स्थानीय रूप से नाटक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद ले सकेंगे। उद्घाटन समारोह में पद्मश्री, ज्येष्ठ अभिनेता अशोक सराफ सहित फिल्म और रंगभूमि के कई मान्यवर उपस्थित थे। उद्घाटन के बाद भरत जाधव के नाटक सही रे सही का मंचन हुआ। इसके अलावा, मराठी फिल्म उद्योग और रंगकर्मियों के कई प्रसिद्ध हस्तियों ने समारोह की शोभा बढ़ाई।

अशोक सराफ ने कहा कि यह नाट्यमंदिर एक प्रकार से मंदिर के समान है और इसका पवित्रता बनाए रखना हम सबका दायित्व है। उन्होंने यह भी कहा कि नाट्यगृह में नाटक और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ निश्चित रूप से होंगी। अंबरनाथ पश्चिमे के सर्कस मैदान में स्थित यह आधुनिक नाट्यमंदिर सिर्फ एक इमारत नहीं, बल्कि शहर की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। इसमें अत्याधुनिक ध्वनि प्रणाली, आकर्षक और प्रशस्त रंगमंच, लगभग ६५८ दर्शकों की क्षमता, दो छोटे सभागृह, प्रदर्शनी कक्ष, कार्यशाला सभागृह, ग्रीन रूम, क्राय रूम, उपहारगृह और भव्य पार्किंग जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यह नाट्यमंदिर अंबरनाथ, कल्याण और डोंबिवली क्षेत्र के लिए एक बहुउद्देशीय और गौरवपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र साबित होगा।

अंबरनाथ में दिवाली पर 'शिवकालीन शस्त्र प्रदर्शन' आयोजित

अंबरनाथ(नि.स)। दिवाली के पावन अवसर पर अंबरनाथ (पूर्व) के कानसई परिसर में शिवसेना और संस्कृती कानसई प्रतिष्ठान के सहयोग से पूर्व नगरसेवक कुणाल भोईर के मार्गदर्शन में 'शिवकालीन शस्त्र प्रदर्शन' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन इंडियन आर्मी के सुभेदार महेंद्र गवई और सलील झवेरी ने किया। शौर्य और संस्कृति का संगम प्रस्तुत करने वाले इस प्रदर्शन में क्षेत्रीय नागरिकों, विद्यार्थियों और युवाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

प्रदर्शन में शिवकालीन काल के विभिन्न शस्त्र जैसे तलवार, भाला, कवच, ढाली आदि की प्रदर्शनी की गई, जिसने उपस्थित लोगों को उस ऐतिहासिक शौर्य और पराक्रम की झलक दिखाई। प्रत्येक शस्त्र न केवल हथियार थे, बल्कि हमारी संस्कृति और इतिहास का जीवंत प्रमाण भी प्रस्तुत कर रहे थे।

कार्यक्रम में उपस्थित नागरिकों और विद्यार्थियों ने शस्त्रों की जानकारी ली, उनकी बनावट और इतिहास को समझा और परिवार सहित ऐतिहासिक क्षणों की तस्वीरें लेकर यादगार अनुभव संजोए। संस्कृती कानसई प्रतिष्ठान द्वारा दिवाली जैसे पावन अवसर पर इस प्रकार का आयोजन समाज में संस्कृति और गौरव को जीवित रखने का प्रेरक उदाहरण साबित हुआ। उपस्थित मान्यवरों ने कहा कि 'शिवकालीन शस्त्र हमारे इतिहास, गौरव और शौर्य की प्रतीक हैं। ऐसे कार्यक्रमों से नई पीढ़ी प्रेरित होगी और हमारी सांस्कृतिक पहचान और मजबूत होगी।'

कार्यक्रम में साई कानसई जेष्ठ नागरिक संघ के अध्यक्ष मोहन पैठणकर, डॉ. सतीश जगताप, विजय इंगळे, फोरेबी यादव, प्रशांत भोईर, जपेश भोईर, युवा सेने के प्रीतीश इंगळे, तन्मय भोईर, देव यादव सहित अन्य क्षेत्रीय मान्यवर बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

न्यायपालिका का कार्यभार कम करने के लिए हाईकोर्ट में दो महीने में भरे जाएँगे 2228 पद

मुंबई(नि.स)। कर्मचारियों की कमी और कार्यभार को देखते हुए, सरकारी वकील ने बॉम्बे हाईकोर्ट को सूचित किया है कि राज्य सरकार के विधि एवं न्याय विभाग द्वारा बॉम्बे हाईकोर्ट के कामकाज के लिए 2228 नए पदों को मंजूरी दे दी है। ये सभी पद बॉम्बे हाईकोर्ट की मुंबई, नागपुर और छत्रपति संभाजीनगर पीठों के कामकाज के लिए बनाए गए हैं। ये सभी पद अस्थायी हैं और इनके वेतन कोष को वित्त विभाग द्वारा मंजूरी दी जाएगी। इसके बाद, राज्य सरकार ने हाईकोर्ट को बताया है कि अगले दो महीनों में अन्य प्रक्रियाएँ पूरी करने के बाद इन पदों पर भर्ती शुरू की जाएगी। एडवोकेट ज्योति चव्हाण ने हाईकोर्ट को बताया, प्रोथोनोटरी, सहायक, लाइब्रेरियन, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, हार्डवेयर इंजीनियर, अनुवादक, दुभाषिया, कोर्ट कीपर, लाइब्रेरियन, क्लर्क, ड्राइवर, माली, कांस्टेबल, लिफ्ट ड्राइवर, सफाई कर्मचारी, रसोइया आदि सभी पद ए से डी श्रेणी में आते हैं और प्रशासन ने इन पदों के सृजन को मंजूरी दे दी है। इस पर संतोष व्यक्त करते हुए हाईकोर्ट ने इस संबंध में सुनवाई 27 नवंबर तक के लिए स्थगित कर दी।

क्या है मामला?

चूंकि न्यायालय का दैनिक कामकाज जनशक्ति की कमी से प्रभावित हो रहा है, इसलिए बॉम्बे हाईकोर्ट ने सुनवाई के लिए स्वप्रेरणा से यह मामला दायर किया है। इस याचिका पर हाल ही में न्यायमूर्ति अजय गडकरी और न्यायमूर्ति रंजीतसिंह राजा भोसले की पीठ के समक्ष सुनवाई हुई। हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को न्यायालय का कार्यभार कम करने के लिए नए पद सृजित करने का आदेश दिया था। तदनुसार, राज्य के विधि एवं न्याय विभाग ने इस पद पर भर्ती करने का निर्णय लिया है।

खारघर में 'दिवाली पहाट' कार्यक्रम का आयोजन

• सुगम संगीत की मधुर प्रस्तुति

नवी मुंबई(नि.स)। शाश्वत फाउंडेशन और स्पंदन म्यूजिक एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में खारघर में 'दिवाली पहाट' मराठी सुगम संगीत कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई। गायकों ने पुराने और नए मराठी गीतों का मधुर संगम प्रस्तुत करते हुए लगभग दो घंटे तक रसिक श्रोताओं को दिवाली की सुरमयी सौगात दी।

इस अवसर पर पनवेल विधानसभा के विधायक प्रशांत ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विधायक प्रशांत ठाकुर ने उपस्थित नागरिकों को दिवाली की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। कार्यक्रम की आयोजक शाश्वत फाउंडेशन की अध्यक्षा बीना गोगरी ने उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में हिंदी और मराठी भाषी गायकों ने पारंपरिक रूप से 'दिवाली पहाट' का आयोजन किया और मराठी भावगीत व भक्तिगीत प्रस्तुत किए। उन्होंने स्पंदन म्यूजिक एकेडमी की सराहना करते हुए कहा कि इसने यह सिद्ध किया कि भाषावाद और प्रांतवाद जैसी बाधाओं को पीछे छोड़कर हम एकजुट रह सकते हैं और एक सुदृढ़ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

कार्यक्रम में स्पंदन म्यूजिक एकेडमी के संस्थापक ग़फ़ार शेख, सौरभ पांडे, चारू तबडके, प्रफुल्ल माणगांवकर, रविंद्र अहिरे, रवी वेंगुरलेकर, समता मोदी, सारंग मोदी जैसे गायकों ने अपनी सुरीली गायकी से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। साथ ही कार्यक्रम में भाजपा उत्तर रायगढ़ जिला सचिव ब्रिजेश पटेल, पनवेल तालुका सचिव सचिन वासकर, भाजपा खारघर मंडल महासचिव दीपक शिंदे, भाजपा खारघर मंडल उपाध्यक्ष अमर उपाध्याय, जागृत फाउंडेशन के अध्यक्ष ज्ञानेश्वर खरपुरिया व उपाध्यक्ष शिवम सिंह, रोटरी क्लब मिडटाउन खारघर के अध्यक्ष शैलेश पटेल, अंजु पटेल, स्मिता आचार्य, नीता गोगरी सहित सैकड़ों श्रोताओं ने इस संगीतमय महफ़िल का आनंद लिया। उपस्थित श्रोताओं ने आयोजकों का आभार व्यक्त किया और अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं कि ऐसे कार्यक्रम उनके क्षेत्र में नियमित रूप से होते रहें।

धनतेरस पर रिकॉर्ड सोने की खरीदारी

एक ही दिन में 1 लाख करोड़ रुपये की खरीदारी

मुंबई (नि.स)। एक ओर जहाँ सोने की कीमतें आसमान छू रही हैं तो खरीददारों की भी कोई कमी नहीं देखी जा रही है। पिछले साल के मुकाबले सोने की कीमतों में करीब 60 फीसदी का इजाफा हुआ है। इस साल सोने की कीमतों में पिछले साल के मुकाबले 60,000 रुपये का इजाफा हुआ है। भले ही कीमतें बढ़ी हैं, लेकिन ग्राहकों का उत्साह कम होता नहीं दिख रहा है। जी हाँ, शनिवार को धनतेरस पर सोने-चांदी की खरीदारी में रिकॉर्ड बढ़ोतरी दर्ज की गई। बताया जा रहा है कि शनिवार को धनतेरस पर 1 लाख करोड़ रुपये तक की खरीदारी हुई। इस साल पिछले साल के मुकाबले 25 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। भले ही सोने की कीमतों में पिछले साल के मुकाबले 60 फीसदी का इजाफा हुआ है, लेकिन खरीदारी के लिए ग्राहकों की भीड़ उमड़ पड़ी। दिवाली के निमित्त हर रोज सोना खरीदने के लिए ग्राहकों की भारी भीड़ उमड़ रही है।

आम सूचना

इस आम सूचना के माध्यम से मैं मोहम्मद असलम मोहम्मद वाहिद अंसारी आम जनता को सूचित करना चाहता हूँ कि मैंने श्रीमती जनाबाई अभिमन्यु वायले से उनकी मालकी वाली प्रापर्टी का सौदा नोटरी सेल एग्रीमेंट, सीरियल नंबर 240, दिनांक 18/09/2025 के माध्यम से किया है। प्रापर्टी का विवरण है:- 56/01, जागृति स्कूल के पास, दुर्गा पाड़ा,उल्हासनगर - 5 तथा जिसका उल्हासनगर मनपा के टैक्स विभाग में प्रापर्टी नंबर 56डीओ019598000 है।

उक्त प्रापर्टी को मैं मोहम्मद असलम मोहम्मद वाहिद अंसारी अपने नाम पर करवाने हेतु उल्हासनगर मनपा के टैक्स विभाग में अर्ज करने जा रहा हूँ। अतः इस प्रापर्टी के संदर्भ में यदि किसी भी व्यक्ति, संस्था या अन्य किसी को किसी भी प्रकार का कोई भी लेना-देना हो या वाद-विवाद हो तो वे इस आम सूचना के प्रकाशित होने के 7 दिनों के भीतर उल्हासनगर मनपा के टैक्स विभाग के उपायुक्त से संबंधित कागजातों के साथ लिखित में संपर्क करें। 7 दिनों बाद आये किसी भी ऐतराज को मान्य नहीं किया जायेगा और चेंज ऑफ नेम की यह प्रक्रिया पूरी कर ली जायेगी।

सही:-

मोहम्मद असलम मोहम्मद वाहिद अंसारी।

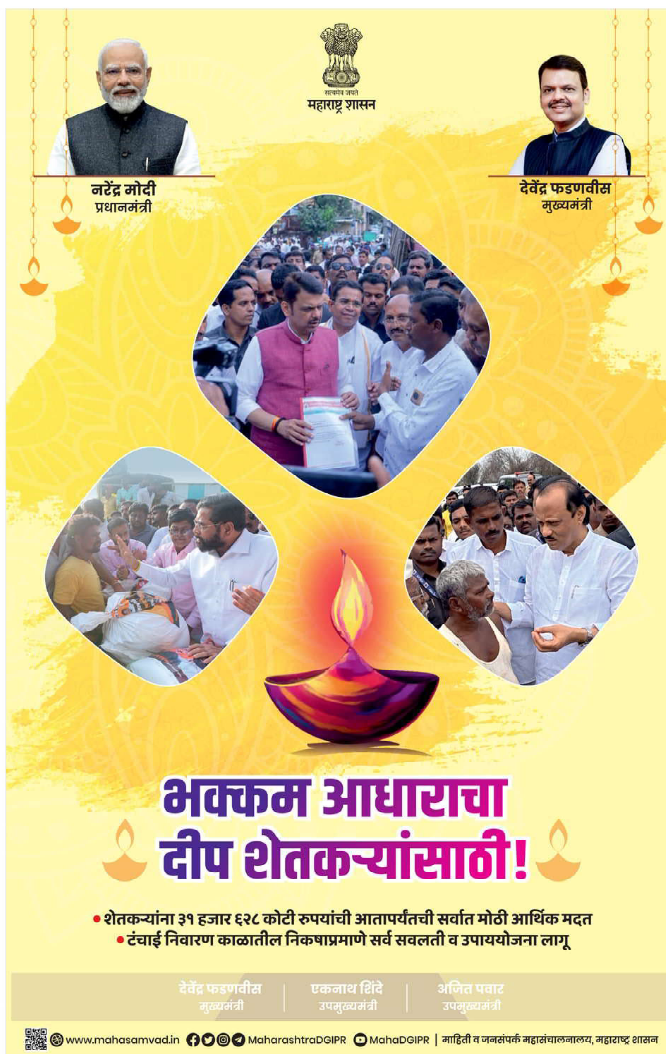

क्रमांक मावज/दिपावली/२०२५-२६ का-५/२१५, माहिती व जनसंपर्क महासंचालनालय, मंत्रालय, मुंबई ४०० ०३२. दि. २०/१०/२०२५